नं०वार पूज्य सो पुजारी कब, कौन और कैसे बनते हैं?

डी.वी.डी. नं.383, वी.सी.डी. नं. 2322, ऑडियो नं. 2808, प्रातः क्लास- 05.11.66

रात्रि क्लास चल रहा था- 05.11.1966। पहले पेज की पाँचवीं लाइन में बात चल रही थी कि ये बड़ी-ते-बड़ी पढ़ाई है और वो पढ़ाने वाला ऊँचे-ते-ऊँचा शिवबाबा है, जिससे ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा पाना है। बच्चे! ये बातें तो भूलनी नहीं चाहिए। तुम जानते हो; ये नहीं जानते। इनके फॉलोअर्स नहीं जानते। किनके? ब्रह्मा बाबा के फॉलोअर्स, वो नहीं जानते। वो माने? वो बहुत दूर हैं, दूसरे धर्म वाले। तुम जानते हो; 'तुम' माने कौन? जो सम्मुख बैठने वाले बच्चे हैं, वो जानते हैं कि सबसे ऊँचे-ते-ऊँचा इस दुनिया में कौन है। भई भगवान है, भगवंत है। अच्छा, अभी गीता में तो साफ लिखा हुआ है कि भगवानुवाच- मैं तुम्हें राजाओं का राजा बनाता हूँ, राजयोग सिखलाता हूँ। गीता में ये अक्षर बड़े क्लीयर लिखे हुए हैं। अभी जो वो पाठशाला पढ़ते होंगे, उसमें जो पढ़ने वाले हैं, उनका नाम रमणीक रखा है। ऐसे तो नहीं है, लिखा नहीं है कि स्त्रियाँ और पुरुष पढ़ते हैं या बच्चे और बच्चियाँ पढ़ती हैं। पता नहीं, गोप और गोपियाँ। यूँ तो कॉमन अक्षर है ना! कोई भी स्कूल में, पढ़ाई में, कॉलेज में ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि गोप और गोपियाँ पढ़ते हैं। गोप-गोपियों का क्या मतलब? जो बाप-टीचर-सद्गुरु के रूप में भगवान आता है, सुप्रीम टीचर के रूप में पढ़ाता भी है, उसके साथ गुप्त सम्बंध रखने वाले हो। स्टूडेण्ट तो हो, राजयोग की पढ़ाई तो पढ़ते हो; कॉलेज के स्टूडेण्ट कौन जास्ती पढ़ते हैं? बताओ। आज की दुनिया में जो भी कॉलेज में पढ़ने वाले स्टूडेण्ट्स हैं, उनमें मेल अच्छा पढ़ते हैं या फीमेल अच्छा पढ़ती हैं? (किसी ने कहा- फीमेल अच्छा पढ़ती हैं।) बुड्ढे-बुड्ढियाँ तो पढ़ते नहीं हैं। आज के जो दुनियावी कॉलेज हैं, उनमें बुड्ढे-बुड्ढियाँ पढ़ते नहीं हैं। मेल पढ़ते हैं जास्ती या फीमेल जास्ती पढ़ती हैं? (किसी ने कहा-फीमेल जास्ती पढ़ती हैं।) पढ़ते तो मेल भी हैं; लेकिन फीमेल अच्छा पढ़ती हैं। तो उसमें कभी भी 'गोप और गोपियाँ' अक्षर काम में नहीं आता है कि पढ़ने वाले गोप हैं। गोप माने गुप्त, गोपियाँ माने गुप्त। ऐसे नहीं कहते हैं। 'गोप और गोपी' अक्षर कभी सतयुग में काम में नहीं आता है। वहाँ सतयुग में गुप्त रहने की दरकार है? जो पढ़ने वाले स्टूडेण्ट्स होंगे, पढ़ाई तो पढ़ेंगे ना, तो उनको वहाँ गुप्त रहने की दरकार है? (किसी ने कहा- नहीं) और यहाँ? (किसी ने कहा- है) क्यों? (किसी ने कहा- विकारी ज़्यादा हैं) हाँ! इस दुनिया में सारे विकारी भरे पड़े हैं। उनकी जैसी दृष्टि वैसी उनको सृष्टि दिखाई देती है। तो उनकी खराब नज़रों से बचने के लिए कैसे पढ़ते हैं? गुप्त रूप में पढ़ते हैं। पढ़ने वाले भी गुप्त और पढ़ाने वाला भी गुप्त और शास्त्रों में भी क्या लिखा हुआ है- पाण्डव भारत में कैसे घूमते थे? गुप्त रूप में घूमते थे। और ऐसा कोई स्कूल होता ही नहीं है, जिसमें एम-ऑब्जेक्ट भी हो और उसमें बुड्ढियाँ हैं, बुड्ढे हैं, बच्चियाँ हैं, बच्चे हैं। यहाँ तो देखो, सब पढ़ते हैं। ऐसा वंडरफुल स्कूल कभी होता ही नहीं है। पाँच हज़ार वर्ष की इस चतुर्युगी में ऐसा वण्डरफुल स्कूल कभी नहीं होता, जैसा अभी संगमयुग में होता है। सबसे पूछो, बुड्ढी से पूछो, कहेंगी- हम पाठशाला जाते हैं, पढ़ने के लिए जाते हैं; नहीं तो गीता-पाठशाला में भी बुड्ढे-बुड्ढियाँ वगैरह जाते हैं; पर उनको तो वो खुशी होती ही नहीं है कि हम ईश्वर की पाठशाला में आए हैं।

ज़रूर एम-ऑब्जेक्ट होण खाते में होना चाहिए। अरे, पाठशाला का मतलब ही है कि कोई एम-ऑब्जेक्ट है। सभी गीता-पाठशाला में बिल्कुल प्रसिद्ध है कि यहाँ एम-ऑब्जेक्ट तो है। भई! कौन-सा एम-ऑब्जेक्ट है? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) गीता-पाठशाला में किसलिए जाते हैं? राजयोग की पढ़ाई पढ़ने जाते हैं, राजाओं का राजा बनने के लिए जाते हैं। ये पढ़ाई दुनिया में और कोई स्कूल-कॉलेजों में नहीं होती; जो क्या बनाए? राजा-रानी बनाए। यहाँ तो रानी का भी नाम नहीं लिया। क्या कहा? राजा बनाता हूँ। तुम सब क्या बैठे हो- नर बैठे हो या नारी बैठे हो? नर तो राजा बनेंगे और नारी हैं, समझते हैं- हम नारी हैं, तो क्या बनेंगे? नारी से लक्ष्मी बनेंगे। स्वाधीन कौन होता है? राजा स्वाधीन होता है और रानी आधीन होती है। और, तुम क्या हो? तुम नर हो या नारी हो? बताओ। (किसी ने कहा- नर हैं) नर हैं! कैसे? (किसी ने कहा- आत्मा है) हमारा बाप और हम, दोनों निराकार आत्मा हैं। निराकार आत्माओं का बाप निराकार शिव और उससे हमारा संबंध क्या है? हम हैं उसके बच्चे और वो हमारा बाप है। हम सब बच्चे हैं उस बाप के या बच्चियाँ भी हैं? पहले हम क्या हैं? हम बच्चे हैं। तो बच्चे हैं तो नर हुए ना! रुद्रमाला के मणके हैं। इस ज्ञान का नाम क्या है? रुद्र-ज्ञान-यज्ञ। रुद्राणी-ज्ञान-यज्ञ नहीं, ब्रह्मा-ज्ञान-यज्ञ नहीं, विष्णु-ज्ञान-यज्ञ नहीं, शिव-ज्ञान-यज्ञ नहीं; रुद्र-ज्ञान-यज्ञ। तो हम किसके बच्चे हैं? रुद्र के बच्चे हैं। बताया- तो हमको राजाओं का राजा बनना है। हमारा लक्ष्य क्या है गीता-पाठशाला में? राजाओं का राजा बनना और गीता में भी है ही राजयोग। अभी कौन राजयोग सिखलाते हैं? ये राजाई करने का योग कौन सिखलाते हैं? शिवबाबा सिखलाते हैं, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत सिखलाते हैं ऊँचे-ते-ऊँची पढ़ाई। और स्कूल-कॉलेज जो भी दुनिया में हुए हैं और हैं, उनमें इतना ऊँचा लक्ष्य कोई में नहीं दिया जाता। वहाँ डॉक्टर बनाएँगे, इंजीनियर बनाएँगे, वकील बनाएँगे, जज बनाएँगे। आधीन बनाएँगे या स्वाधीन राजा बनाएँगे? आधीन बनाएँगे। और बाबा? (किसी ने कहा- स्वाधीन बनाकर जाएँगे) बाबा का नारा है- ''स्वतंत्र रहो और स्वतंत्र रहने दो।'' तो देखो, आज की दुनिया में जो राजाएँ हैं, आज की दुनिया में जो गवर्मेण्ट है, गवर्मेण्ट के जो भी भांती हैं, गवर्मेण्ट में जो भी प्रजा के ऊपर प्रजा का राज्य है, सब आधीन हैं या स्वाधीन हैं? (किसी ने कहा- आधीन) क्योंकि पढ़ाने वाले, जिन धर्म से कनेक्टेड वो राज्य हैं, उन धर्म के धर्मपिताएँ देह-अभिमानी थे या आत्माभिमानी थे? (सभी ने कहा-देह-अभिमानी) और हमारा बाप शिव? हमारा सुप्रीम टीचर आत्मिक स्टेज वाला है, ऊँचे-ते-ऊँची स्टेज वाला है। तो सोचना चाहिए- हमको राजयोग कौन सिखाते हैं? ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत राजयोग सिखाते हैं। दुनिया में- पण्डित, धर्मगुरु, विद्वान, आचार्य ये तो गीता बैठ करके पढ़ाते हैं। भगवानुवाच है- जो राजयोग सीखकर गए, उनके लिए भक्तिमार्ग में गीता-पाठशाला की (बात) सुनी थी। बाकी कोई ऐसे नहीं है कि कोई पाठशाला में एम-ऑब्जेक्ट है।

गीता की पाठशाला में जाते हैं वो लोग। वहाँ पढ़ने तो जाते हैं; लेकिन ये नहीं जानते कि वहाँ प्रैक्टिकल में पढ़ाने वाला ऊँचे-ते-ऊँचा है और ऊँचे-ते-ऊँची पढ़ाई, राजाई की बड़ी रॉयल पढ़ाई पढ़ाते हैं। तुमसे कोई पूछे- क्या पढ़ने जाते हो? अरे, राज़योग पढ़ने जाते हैं, जिस पढ़ाई में राज़ भरा हुआ है। वो राज़ की बातें सबको बताई जाती हैं क्या? (किसी ने कहा- नहीं) बच्चा बुद्धियों को बताई जाएँगी? (किसी ने कहा- नहीं) उनकी समझ में आएँगी? (किसी ने कहा- नहीं आएँगी) ये राज़ की बातें जो राज़दार हैं, उनको बताई

जाती हैं और ये है बिल्कुल सहज राजाओं का राजा बनना। राजाओं के राजे तो होते ही हैं ये। ये तुम बच्चों को याद रखना चाहिए कि और कोई दूसरे मुल्कों में ऐसे कभी भी कोई होता ही नहीं है कि कोई पवित्र राजाएँ हों और उनको जो अपवित्र राजाएँ मत्था टेकते हों या मंदिर हों और उनको फिर वो जो पतित होवें, वो जा करके मत्था टेकें। ऐसा कोई दूसरे देशों में होता है? (किसी ने कहा- नहीं होता) सिवाय भारत के ऐसा कोई भी खंड में- बौद्धी खण्ड हो, क्रिश्चियन खण्ड हो, मुस्लिम खण्ड हो, कोई भी जगह में ऐसा नहीं होता। अभी भी तुम जाओ, कोई भी राजा के घर मंदिर में, उनके पास मंदिर ज़रूर होगा, वो मंदिर में राजा ज़रूर जा करके मत्था टेकता होगा। कब की बात बताई? अभी भी। अभी भी माने कभी भी? जब ये वाणी चल रही थी उस समय की बात बताई कि 1966 में जो भी गिने-चुने नाममात्र के टाइटिलधारी राजाएँ रह गए या कम-से-कम भूटान का राजा तो अभी भी है। भ्रू माने भौंह, टान माना तान दी। "भृकुटी विलास सृष्टि लय होई, सपनेहुँ संकट परै किसोई।"- जिसकी भृकुटी के विलास मात्र से सारी सृष्टि विलीन हो जाती है। वो कौन हो सकता है? वो ही रौद्र रूप धारण करने वाला है, जो कहा जाता है- ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत। तो देखो, अभी भी जो गिने-चुने नाममात्र के राजाएँ रह गए हैं, उनके घर में जाओ तो मंदिर ज़रूर होगा, वो मंदिर में राजा ज़रूर जाकर मत्था टेकता होगा। राजा किसको मत्था टेकेगा, वो तो राजा है! अरे, वो सोचेगा तो- मुझे राजा बनाने वाला कौन, राजाई की पढ़ाई पढ़ाने वाला कौन। तो जो है, उसको भक्तिमार्ग में वो राजाएँ आज भी माथा टेकते हैं। किसके मंदिर में माथा टेकते हैं? लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में। कौन-से लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में? (किसी ने कहा- जो अपने पुरुषार्थ के बल पर नर से नारायण बने हों।) जो नर से प्रिंस बनते हैं सतयुग में, आठ प्रिंस होते हैं ना सतयुग में, फिर बाद में प्रिंस से नारायण बनते हैं, उनको माथा टेकते हैं? (किसी ने कहा- नहीं) उनका तो गायन ही नहीं है; गायन किनका है? नर से प्रिंस बनने वाले सतयुग के आठों राजाओं का गायन है या उनको राजा बनाने वाले का गायन है? (किसी ने कहा- राजा बनाने वाले का) उनसे भी ऊँची स्टेज में कोई है, जो उन आठों सतयुग के नारायणों को, जो प्रिंस बनते हैं, प्रिंस बनने के बाद फिर नारायण का टाइटिल लेते हैं, उनको भी बनाने वाला है और वो सतयुग में नहीं है। कहाँ है? (किसी ने कहा- संगम में) हाँ, सतयुग से भी ऊँचा कोई युग है जहाँ भगवान आते हैं, जिनको ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कहा जाता है। अभी देखो, वो भी तो महाराजा-महारानी हैं- सतयुग के आठों और वो भी महाराजा-महारानी। किसकी तरफ़ इशारा किया होगा? संगम के लक्ष्मी-नारायण की तरफ़ इशारा किया- वो भी महाराजा-महारानी।

तो दोनों प्रकार के टाइटिलधारियों में कोई फ़र्क है या नहीं है? क्या फ़र्क है? (किसी ने कहा- शरीर का फर्क है- (एक है जो) शरीर छोड़कर बनेगा; (एक है जो) इसी शरीर से बनना है।) नहीं, फ़र्क है! वो पढ़ाई पढ़ करके इसी जन्म में डायरैक्ट नर से नारायण बनते हैं। अंधश्रद्धा की पढ़ाई नहीं, जो भक्त लोग कहते हैं या अधूरे ब्रह्माकुमार-कुमारी समझते हैं कि यहाँ हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं और सतयुग में जाके अगले जन्म में हम राजा बनेंगे। ऐसी कोई पढ़ाई पढ़ता है क्या? कोई कहे कि हमारे कॉलेज में डॉक्टर बनाया जाता है, डॉक्टर की पढ़ाई होती है। अच्छा, कब डॉक्टर बनेंगे? अगले जन्म में बनेंगे। कोई कहे- हमारे कॉलेज में इंजीनियर बनाया जाता है। कब बनेंगे? अगले जन्म में बनेंगे। अरे! ऐसी अंधश्रद्धा की पढ़ाई कोई पढ़ेगा क्या? (किसी ने कहा- नहीं) पढ़ाई यहाँ पढ़ें और ये शरीर छूट जाए, फिर उसके बाद अगले जन्म में प्राप्ति

करें; तो ऐसी पढ़ाई तो कोई मूर्ख ही पढ़ेगा! हम तो शिवबाबा/भगवान के बच्चे हैं। भगवान हमें क्या सिखाता है? बिना प्रूफ और प्रमाण के हम कोई बात मानने वाले नहीं हैं। "बिना प्रूफ (proof) और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते।" (अ.वा. 28.4.74 पृ.34 अंत) हम ऐसी अंधश्रद्धा की पढ़ाई क्यों पढ़ेंगे! हम तो वो पढ़ाई पढ़ते हैं कि यहीं पढ़ाई पढ़ें और यहीं ऊँच पद पाएँ। तो देखो, तुम भगवान से ऐसी पढ़ाई पढ़ते हो। भगवान कोई अंधश्रद्धा नहीं सिखाता है। भक्तिमार्ग में अंधश्रद्धा सिखाई जाती है और जिन अधूरे ब्राह्मणों के द्वारा भक्तिमार्ग की शूटिंग होती है, वो भी ऐसी ही बातें करते हैं। वो ब्रह्माकुमार-कुमारी तो कहलाते हैं, किंतु नीची कुरी के ब्राह्मण हैं, पढ़ाई तो वो भी पढ़ते हैं; लेकिन उनकी मान्यता क्या है? जो अपन को सिर्फ़ बी.के. कहते हैं, बाप का नाम नहीं बताते; क्या कहते हैं वो? हम यहाँ पढ़ाई पढ़ेंगे और अगले जन्म में राजा-रानी बनेंगे। तो बाप कहते हैं- मैं तो बुद्धिमानों की बुद्धि हूँ और तुम बच्चे भी त्रिनेत्री बाप के बच्चे हो। तीसरा नेत्र कौन-से देवता को दिखाते हैं? शंकर को दिखाते हैं। शंकर को ही 'रुद्र' कहा जाता है। ऐसा रुद्र रूप धारण करता है कि सारी दुनियाँ के जो आततायी हैं, उन सबको ख़लास कर देता है। तो देखो, वो अंधश्रद्धा की पढ़ाई पढ़ने वालों में और ये जो श्रद्धा-विश्वासयुक्त पढ़ाई है, वो पढ़ाई पढ़ने वालो में कितना बड़ा फ़र्क है!

तुम पढ़ाई पढ़ते हो डायरैक्ट नर से नारायण बनने की और पढ़ाने वाला है, कौन है? (किसी ने कहा- ऊँचे-ते-ऊँच भगवान) भगवान! (किसी ने कहा- शिवबाबा) शिव नहीं; शिव तो बाप है या बाबा है? शिव तो आत्माओं का सिर्फ़ बाप है, दूसरा कोई संबंध है ही नहीं। दूसरे संबंध तब बनते हैं, जब वो आत्माओं का बाप कोई मुक़र्रर साकार शरीर में प्रवेश करता है, तब ढेर-के-ढेर संबंध भगवान के साथ बनते हैं, सर्व संबंध बनते हैं। तो बोला- उसको क्या कहा जाता है- शिवबाप या शिवबाबा? (किसी ने कहा- शिवबाबा) बाबा माने ही साकार और निराकार का मेल। "अशरीरी और शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।" (मु.9.3.89 पृ.1 मध्य) तो देखो, हमको पढ़ाने वाला वो शिवबाबा है, जो स्वयं भी नर से नारायण बनता है। डॉक्टर, डॉक्टर को पढ़ाएगा; इंजीनियर ही इंजीनियर को पढ़ाएगा! नहीं! वॉशरमेन पढ़ाएगा इंजीनियर को? खुद इंजीनियर होगा तो इंजीनियरिंग की पढ़ाई पढ़ाएगा; डॉक्टर होगा तो डॉक्टर की पढ़ाई पढ़ाएगा। तो हमारा बाबा क्या है? हमारा बाबा ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है। जो भी 'नारायण' नाम के टाइटिलधारी हैं। दुनिया में भी तो हुए हैं- किंग एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकिंड, थर्ड, फोर्थ; हुए ना! तो ऐसे ही, सतयुग में नारायण दी फर्स्ट, सेकिंड, थर्ड- ऐसे परम्परा चलाई गई। किसके द्वारा चलाई गई? जिसने चलाई, वो है ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत। जिसके लिए गीता में कहा- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः'' (3/23)- इस संसार में जितने भी मनुष्य हैं, वो मेरे ही रास्ते का अनुगमन करते हैं। मैंने जो परम्परा चलाई, उस परम्परा पर दुनिया के सारे मनुष्य चलते हैं।

तो पहली-2 परंपरा जो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ है, सत्व/सतोप्रधान परम्परा राजाई की, वो किसने चलाई? शिवबाप ने चलाई? शिवबाप ने युक्ति बताई। शिवबाप ने रास्ता बताया। शिवबाप तो राजा बनता ही नहीं। तो युक्ति बताई और उस युक्ति को जिसने प्रैक्टिकल जीवन में पहले-2 अव्वल नम्बर में फॉलो किया,

उसको निमित्त बनाय दिया- योग की पढ़ाई पढ़ाने के लिए। योगी किसे कहा जाता है? जो योग लगाए सो योगी। योग न लगाए तो योगी कहा जाएगा? (किसी ने कहा- नहीं) शिव को योगी कहेंगे? (किसी ने कहा- नहीं कहेंगे) नहीं कहेंगे! क्यों? शिव परमधाम से आता है, तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई तो आत्मा है, जिसके ऊपर फ़िदा हो करके आता है। वो कौन-सी आत्मा है, जिसके ऊपर पहले-2 फ़िदा होकर आता है? मुरली में बोला है- मैं आशिक हूँ। जो ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है, जिसका कोई बाप नहीं, वो ऊँचे-ते-ऊँचा बाप कहता है- मैं आशिक हूँ। किसका? कौन है उसका माशूक? मुकर्रर रथ, भाग्यशाली रथ। कैसा रथ? भाग्यशाली रथ। हारता रहे या हार जाए तो भाग्यशाली या लगातार जीतता रहे तो भाग्यशाली? (किसी ने कहा- लगातार जीतता रहे) तो बताओ, शास्त्रों में किसी का गायन है? शास्त्रों में एक ही शख्सियत है जिसका गायन है- सदैव युद्धों में उसकी विजय हुई है; कभी भी उसकी हार नहीं हुई और बाबा भी क्या कहते हैं? बच्चे! विजय तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। “आप ब्राह्मणों का विजय जन्मसिद्ध अधिकार है।” (अ.वा.3.3.07 पृ.2 अंत) तो देखो, ये राज़योग की पढ़ाई ऐसी पढ़ाई है, (इसमें) ऐसा राज़ भरा हुआ है, जो राज़ है- पढ़ाई पढ़ाने वाला जो ऊँचे-ते-ऊँचा है, वो सिर्फ़ जन्म-मरण के चक्र से न्यारा होने के कारण, त्रिकालदर्शी होने के कारण ज्ञान का अखूट भंडार है; लेकिन उस अखूट भंडार से जो प्राप्तियाँ होती हैं, सिद्धियाँ होती हैं, रिद्धियाँ होती हैं; उन सिद्धियों-रिद्धियों को प्राप्त करने वाला है? उसको अपना शरीर ही नहीं है, तो रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करने का कोई मतलब ही नहीं; क्योंकि शरीर से ही सुख भोगा जाता है, शरीर से ही दुख भोगा जाता है। तो वो सिर्फ़ युक्ति बताता है। त्रिकालदर्शी होने के कारण वो युक्ति बताता है कि नई सत्वप्रधान दुनिया कैसे बनती है और तमोप्रधान दुनिया कैसे बनती है और सत्वप्रधान दुनिया में ऊँचे-ते-ऊँचा सात्विक राजा कैसे बनेंगे। सात्विक माने 100 परसेण्ट सात्विक या कुछ मिक्स? (किसी ने कहा- 100 परसेण्ट) जो नई दुनिया बनेगी, नई दुनिया की राजधानी बनेगी, वो 100 परसेण्ट सात्विक राजधानी बनेगी या कुछ नीची कोटि की बनेगी? (सभी ने कहा- 100 परसेण्ट) तो बनाने वाला भी कैसा होना चाहिए? 100 परसेण्ट सात्विक होना चाहिए। अच्छा, 100 परसेण्ट सत् होना चाहिए और गीता में भी क्या लिखा हुआ है? ‘‘नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः’’ (2/16)- सत् का कभी इस संसार में अभाव नहीं होता और जो असत् है, जो झूठ है, उसके पाँव नहीं होते; वो सर पर पाँव रख करके भाग खड़ा होता है। और सच्चा टिका रहता है कि झूठा टिका रहता है? सच्चा टिका रहता है। यज्ञ के आदि में सारी दुनियाँ एक तरफ़ और एक आत्मा दूसरी तरफ़ थी। तो जो आत्मा सारी दुनियाँ से टक्कर लेती है, घबराती नहीं, वो आत्मा टिकी रहने वाली है या इस दुनिया में ख़त्म हो करके नष्ट हो जाने वाली है? टिकी रहने वाली है।

तो वो आत्मा दुष्टों का दमन करने के लिए अभी भी है; परंतु ड्रामा ऐसा बना हुआ है, जो शास्त्रों में लिखा है कि ‘‘ब्रह्मा ने सृष्टि रची। पहली बार रची, पसंद नहीं आई और बिगाड़ दी।’’ तो कब की शूटिंग की बात है? बताओ। यज्ञ के आदि की बात है। सन् 1936/37 में जो ब्राह्मणों की दुनिया ब्रह्मा के द्वारा रची गई, वो द्वितीय विश्वयुद्ध के टाइम पर, बेहद ब्राह्मणों की दुनिया में जो दूसरा विश्वयुद्ध हुआ, उसमें भी वो हीरों की शमा नष्ट हो गई। क्या हुआ? ज्ञान के ऐसे बॉम्ब फटे कि वो ब्राह्मणों की दुनिया, हीरों की दुनिया (नष्ट हो गई)। नौ कुरियों के ब्राह्मण होते हैं, उनमें से जो हीरों की दुनिया थी; क्या नाम

दिया? भक्तिमार्ग में भी नाम है- नागासाकी और हीरोशमा; नष्ट हो गई। फिर क्या हुआ? सन् 1946/47 में ब्रह्मा के द्वारा दूसरी बार सृष्टि रची गई, तो नाम बदल गया। पहले 'ॐ मण्डली' नाम था, फिर बाद में 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम पड़ गया। फिर, जिस ब्रह्मा के द्वारा रची गई, उस ब्रह्मा ने 1969 में शरीर छोड़ दिया। जैसे पहले क्या हुआ था? 1942 में शरीर छोड़ दिया और पाँच साल के बाद जो दूसरा ब्रह्मा आया, जो बाबा ने बोला- मैं जिसमें भी प्रवेश करूँगा उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ और ब्रह्मा कोई एक का नाम तो है नहीं। "अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।" (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) इसका मतलब शिव कोई एक में ही प्रवेश नहीं करते; औरों में भी प्रवेश करते हैं। तो जिस ब्रह्मा का नाम रखा (और जिसके नाम के आधार पर) 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम पड़ा, वो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का जो मुखिया 'ब्रह्मा' था, वो 18 जनवरी, 1969 को चल बसा।

तो देखो, दूसरी बार भी विनाश शुरू हुआ कि नहीं हुआ? विघटन शुरू हो गया कि नहीं? (किसी ने कहा- हो गया) कोई भी धर्म होता है, धर्मपिता जब तक जीवित रहता है तब तक धर्म सही चलता है और जब वो शरीर छोड़ देता है, तो उसके जो फॉलोअर्स होते हैं, गद्दी पर बैठते हैं, वो काम खराब कर देते हैं कि अच्छा करते हैं? गद्दीनशीन खराब कर देते हैं। तो इसकी शुरुआत यहाँ होती है। 1969 से जो देहधारी धर्मगुरु गद्दी पर बैठे, बस, विघटन शुरू हो गया और वो विघटन प्रत्यक्ष तब हुआ, जब सन् 1966 में ही बाबा ने मुरली में बोल दिया था- 10 वर्ष में पुरानी दुनिया का, ब्राह्मणों की दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना हो जावेगी। "10 वर्ष में हम भारत को फिर से सतयुगी, श्रेष्ठाचारी, 100 प्रतिशत पवित्रता-सुख-शांति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनिया का विनाश कैसे होगा, वो आकर समझो।" (मु.ता.25.10.66 पृ.1 मध्य) तो उस हिसाब से 1976 आता है। तो 1976 में फिर स्थापना शुरू हुई। 'एडवांस पार्टी' के नाम से ब्राह्मणों का नया संगठन बनता है तीसरी बार और पुराने ब्राह्मण जो हैं, जो अपन को बी.के. कहते हैं, बाप का नाम नहीं जानते। छोटे-2 बच्चे होते हैं, शिशु बच्चे, उनसे पूछो- तुम्हारे बाप का नाम क्या है? तो जानते हैं? नहीं जानते। बड़े होंगे तब जानेंगे। तो ऐसे ही, वो छोटे-2 दूधमुँहे बच्चे, वो अपने बाप का नाम ही नहीं जानते; उन बच्चों ने ईश्वर बाप को नहीं जाना। अरे, वो कैसे पहचानेंगे? उनको जन्म देने वाला जो ब्रह्मा दादा लेखराज था, उसने बाप को पहचाना था? (किसी ने कहा- नहीं) जिस बाप ने उस ब्रह्मा के बुद्धि रूपी पेट में ज्ञान का बीज डाला था कि तुम सतयुग में कृष्ण के रूप में जन्म लेने वाले हो, वर्तमान जीवन में तुम्हें ब्रह्मा का (सफेदपोश का) पार्ट बजाना है- ये तुम्हारे साक्षात्कार का अर्थ है; अब ये पुरानी दुनिया का विनाश होने वाला है- ये विनाश के साक्षात्कार का अर्थ है; उनकी बुद्धि में बैठ गया। जिसकी बुद्धि में बैठा, उस ब्रह्मा ने जाना ही नहीं। तो ब्रह्मा ने ही नहीं जाना तो जो ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं, वो जानेंगे? वो भी नहीं जान सके। आज तक भी नहीं जान सके। हाँ, उनमें से जो पूर्वजन्म के थे, हीरोशमा में (जिनका) संगठन ख़लास हो गया था, वो ही ब्राह्मण नंबरवार एडवांस पार्टी में आते जाते हैं। जो बाबा ने मुरली में बोला- तुम बच्चों की आत्मा रूपी सूई की देहभान की सारी कट उतर जावेगी; आत्मा की, देह की नहीं कहा; आत्मा की सारी कट उतर जावेगी, तो तुम डायरैक्ट बाप से सीखेंगे। "बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी ना। सुई साफ है तो चकमक तरफ खैंचेगी। कट लगी हुई होगी

तो खैंचेगी नहीं। यह भी ऐसे ही है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकल जावेंगी।" (मु.ता. 16.3.68 पृ.3 मध्यांत) कौन-से बाप से सीखेंगे? (किसी ने कहा- शिवबाप) शिवबाप से! डायरैक्ट शिवबाप से सीखेंगे या मनुष्य-सृष्टि के बाप से सीखेंगे? (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि के बाप से) मनुष्य-सृष्टि के बाप की प्रत्यक्षता की बात दस साल पहले ही बता दी- इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ। "इन ल॰ना॰ का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।" (सन् 66 की वाणी है) (मु॰4.3.70 पृ॰3 मध्य) माना 1976 में वो प्रत्यक्षता रूपी जन्म साबित हो जाता है। तो 1976 में जो प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ, उसको जो दूधमुँहे ब्राह्मण थे, उन्होंने भी मनाया और जो समझदार ब्राह्मण थे, उन्होंने भी मनाया। 1976 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया या नहीं मनाया? (किसी ने कहा- मनाया) कौन-से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष? मनुष्य-सृष्टि के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया; कि आत्माओं के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया? बिंदु-2 आत्माओं का बाप सिर्फ़ ज्योतिबिन्दु, जिसका नाम 'शिव' है, उसका शरीर है ही नहीं, वो तो अभी भी प्रत्यक्ष नहीं हुआ है। कब प्रत्यक्ष होता है? यादगार बनी हुई है- महाशिवरात्रि। महा माने बड़ी; बड़े-ते-बड़ी शिवरात्रि। जितनी बड़ी शिवरात्रि कभी न हुई है, न भविष्य में होगी; ऐसी बड़े-ते-बड़ी अज्ञान-अंधकार की रात्रि। तो 1976 को दुनिया की बड़े-ते-बड़ी अज्ञान-अंधकार की रात्रि कहें? नहीं कहेंगे। हाँ, मनुष्य-सृष्टि के बाप का जन्म हुआ; जन्म माने प्रत्यक्षता हुई।

ब्राह्मणों ने पहचाना कि इस मनुष्य-सृष्टि का बाप, जो मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ है, उसका बीज कौन है। झाड़ में जो पहला फल निकलता है, उसमें से जो बीज तैयार होता है, वो बीज पहले-2 अपने को सारे वृक्ष से डिटैच करता है या नहीं; कि अटैच रहता है? लगाव रहता है या बेलगाव हो जाता है? बेलगाव हो जाता है। नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। नष्टोमोहा का मतलब क्या है? पहले अपने शरीर से नष्टोमोहा, फिर शरीर के पदार्थों से नष्टोमोहा, फिर शरीर के संबंधियों से नष्टोमोहा। तो ऐसी स्टेज जो पहले-2 प्राप्त करता है, उस आत्मा का नाम दिया 'मनुष्य-सृष्टि का बाप'; वो पहला बीज है मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ का, परिपक्व बीज। कैसा बीज? अपनी देह का लगाव नहीं कि इस देह का जो पेट है, उसका भरण-पोषण कैसे होगा; नहीं तो मोस्टली देह के भरण-पोषण के लिए, देह के संबंधियों के भरण-पोषण के लिए, देह के पदार्थों की प्राप्ति के लिए जो दैहिक धंधे हैं, (उन्हें) टोटली छोड़ करके कोई सारे जीवन के लिए ईश्वरीय धंधे में ही लग जावे- न अपनी देह की परवाह करे, न देह के संबंधियों की परवाह करे, न देह के पदार्थों की परवाह करे; ये सहज है या मुश्किल है? (किसी ने कहा- सहज) सहज है? (किसी ने कहा- मुश्किल) ब्राह्मणों की दुनिया में ऐसा कोई दिखाई दे रहा है, जिसने धंधे छोड़ दिए हों, देह के पदार्थ छोड़ दिए हों, चिंता न करे- भविष्य में क्या होगा? नहीं तो बाबा तो कहते हैं- अकाल पड़ेगा। "आगे चल दुनिया की हालत बिल्कुल खराब होनी है। खाने (के) लिए अनाज नहीं मिलेगा तो घास खाने लगेंगे। फिर ऐसे थोड़े ही कहेंगे, माखन बिगर हम रह नहीं सकते।" (मु.5.3.76 पृ.3 अंत) पानी की बूँद नहीं मिलेगी, रोटी का टुकड़ा नहीं मिलेगा। नोटों की गड्डियाँ पड़ी रहेंगी सड़क पर और आदमी भूख मरते रहेंगे। तो देह के पदार्थों के लिए, देह के संबंधों के लिए लगाव आएगा कि नहीं आएगा? मनुष्य सामाजिक प्राणी है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) समाज के बगैर रह सकता है या नहीं रह सकता? (किसी ने कहा- नहीं रह सकता) यज्ञ के आदि में भी सब समाज की तरफ़

झुक गए थे। ब्राह्मणों की दुनिया में ऐसा हुआ, एक को छोड़ करके; हुआ या नहीं हुआ? (किसी ने कहा- हुआ) सब समाज की तरफ़ झुक गए। एक ही बचा, समाज की कोई परवाह नहीं की। फिर दूसरी बार जो ब्राह्मणों की दुनिया रची जाती है, उसमें भी ऐसे ही होता है- पूरे ब्राह्मण परिवार की कोई चिंता नहीं करता। एक चिंता नहीं करता और बाकी सब ब्राह्मण परिवार से सन् 1976 में अटैच होकर रहे थे या नहीं रहे थे? अटैच होकर रहे ना! तो एक ही बीज है अव्वल नंबर, जिसके लिए दूसरे धर्मों में गायन है- अल्लाह अव्वलदीन।

हर धर्म में एक ही आत्मा होती है, जो अपने धर्म की अव्वल आत्मा होती है, उसको कहते हैं उस धर्म का पिता या उस धर्म का प्रजापिता कहो। तो ऐसे ही, सन् 1976 में एक आत्मा प्रत्यक्ष होती है, डिटैच होती है और लम्बे समय तक, पाँच साल तक भी डिटैच हो करके रहती है, कोई भी उसका सहयोगी नहीं बनता और वो आत्मा परवाह नहीं करती कि कोई सहयोगी बने या न बने। पहला-2 सहयोगी कौन बनता है? (किसी ने कहा- जगदम्बा) हाँ, जगतपिता है सारे जगत का, सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप है, तो मनुष्य-सृष्टि के बाप का सृष्टि-निर्माण के कार्य में जो पहला-2 सहयोगी बनेगा, वो माता ही बनेगी ना! तो जगतपिता के साथ जगदम्बा निकलती है, जो 1981 की अव्यक्त वाणी में बोला- तेरहवें में तेरा होना चाहिए ना! "अभी तेरहवें में तेरा ही होना चाहिए ना।" (अ.वा.21.3.81 पृ.80 मध्य) माना तेरहवें तक ब्रह्माकुमारियों में से कोई भी तेरा नहीं हुआ? (किसी ने कहा- मन-बुद्धि से तो नहीं हुआ) उसको पहचाना ही नहीं तो तेरा कहाँ से होगा! पहली बात क्या है? पहली बात पहचानने की है, बाप को पहचानना- कौन है मनुष्य-सृष्टि का बाप? पहचानेगा तभी तो उसका बनेगा! तो पहचाना किसी ने? जिसने पहचाना, वो सरेंडर हो गया। काहे-2 से सरेंडर हो गया? तन से सरेंडर हो गया और मुरली में बोला है- तन भी पूरा अर्पण करना पड़े। ये नहीं कि नाक अर्पण कर दी तो कान छोड़ देंगे, आँख अर्पण कर दी तो मुँह छोड़ देंगे, हाथ अर्पण कर दिया तो पाँव छोड़ देंगे। नहीं! मुरली का महावाक्य क्या कहता है? तन भी पूरा अर्पण करना पड़े। तो ऐसी समर्पण होने वाली कोई आत्मा के लिए बोला- तेरहवें है, तो तेरा होना चाहिए ना! तो सवाल पैदा होता है- अरे, इतनी ब्रह्माकुमारियाँ सरेंडर हो गईं, कोई तेरी नहीं बनीं? अरे, उस तेरे को पहचानेंगी तब बनेंगी कि बिना पहचाने ही बन जाएँगी? (किसी ने कहा- पहचानेंगी) तो उस तेरे को पहचानने वालियों में जो निकलती है, वो ही सृष्टि की माता 'जगदम्बा' कही जाती है। जिस जगदम्बा से सारा ही जगत उत्पन्न होता है। सारा जगत माने हर धर्म के वंश वाले। कहाँ से जन्म लेते हैं? (किसी ने कहा- जगदम्बा से) चलो, रुद्रमाला है पहली-2 माला, चंद्रवंशियों की माला से भी पहले। विजयमाला से भी पहले कौन-सी माला बनती है? रुद्रमाला। तो रुद्रमाला है; उस रुद्रमाला में भी ऊपर के दो मणके होते हैं। वो जो दो मणके हैं, वो मुख्य हैं, जो उस फूल के निकट हैं- दाईं ओर का मणका और बाईं ओर का मणका। एक फर्स्ट और एक लास्ट; प्राप्ति करने वाले बच्चों में/भांतियों में फर्स्ट मणका बाप और लास्ट मणका माता। आज भी परिवार में, भारतीय परिवारों में ये परम्परा चली आ रही है कि माता अपना कोई हक नहीं लेती; माता सब-कुछ अपना किसको अर्पण कर देती है? बच्चों को अर्पण कर देती है। अभी बाप आए हैं। इस भ्रष्टाचारी गवर्मेण्ट में भी ऐसे ही नियम था, माता का कोई हक नहीं था- चल-अचल सम्पत्ति में। किसका हक होता था? बच्चों का हक होता था सारा।

माता सब-कुछ अर्पण कर देती थी। ऐसी त्याग की मूर्ति भारत की माताएँ थीं। अभी तो विदेशियों का प्रभाव पड़ गया तो यहाँ की गवर्मेंट ने, जो विदेशियों से प्रभावित है, उसने ये नियम बना दिया- माताओं को भी परिवार की सम्पत्ति में हिस्सा मिलना चाहिए। नहीं तो माता जितनी बच्चों के लिए, परिवार के लिए त्यागी-तपस्वी होती थी, इतना संसार में भारतीय माताओं के मुकाबले कोई भी त्यागी-तपस्वी नहीं हो सकता था। तो देखो, ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? (किसी ने कहा- ब्राह्मणों की दुनिया से) हाँ, ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया से ये परम्परा शुरू होती है। जो जगदम्बा है वो बच्चों को सब-कुछ अर्पण कर देती है। ढेर-के-ढेर बच्चे पैदा होते हैं, रुद्र-वत्स कहे जाते हैं, रुद्रमाला के मणके कहे जाते हैं।

वो रुद्रमाला के मणकों में, एक-2 रुद्राक्ष में ढेर सारे मुख बने हुए होते हैं। कोई में एक मुख भी होता था, होता है। वो एक मुख वाला मणका बड़ा विरल मिलता है। यूँ कहें मिलता ही नहीं, बहुत मुश्किल से मिलता है। कोई में 2, कोई में 4, कोई में 14- ऐसे-2 मुख बने होते हैं। किसकी यादगार है? मुख लेने की यादगार है। उनका मुख कौन लेता है? जैसे रुद्रमाला का जो अव्वल नंबर मणका है, वो एक मुख वाला है या अनेक मुख वाला है? एक मुख वाला है, एक बात (करने वाला है)। कहते भी हैं- ट्रुथ इज़ गॉड। जो सत्य है वो एक होता है या अनेक होता है? एक होता है। तो ट्रुथ इज़ गॉड और गॉड इज़ वन। भगवान क्या है? सत्य है, इस सृष्टि पर सदाकाल सत्य है और बाबा ने भी मुरली में कहा- इस सृष्टि पर सदा कायम कोई चीज़ है ही नहीं; सदाकायम एक ही शिवबाबा है, जो मनुष्य-सृष्टि का बीज है। “इस सृष्टि में हट्टी (सदा) कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। बाकी तो सबको नीचे आना ही है।” (मु॰2.1.75 पृ॰3 अंत) सृष्टि के आदिकाल से ले करके, नर से नारायण बनने के समय से ले करके 84वें जन्म तक इस सृष्टि पर अंत तक कायम रहता है और जब नई सृष्टि शुरू होती है तो भी कायम रहता है। इसलिए झाड़ के चित्र के ऊपर वो एक ही शख्सियत नग्न रूप में बैठी हुई दिखाई है। कौन? शंकर को दिखाया है। सृष्टि रूपी वृक्ष का जो बीज पहले-2 बोया गया, वो ही बीज; कि दाना खाक में मिलकर गुले-गुलज़ार होता है; वो कैसा बीज है, कैसा दाना है? धरणी में अपने को खाक बना देता है, ऐड़ी से लेके चोटी तक की सारी शक्ति नए वृक्ष को तैयार करने में लगा देता है। खाक हो जाने के बाद कुछ बचता है? कुछ नहीं बचता। खाक हो गया माने ख़लास हो गया। तो देखो, वो बीज है जो धरणी रूपी कन्याओं-माताओं में अपनी सारी शक्ति तिरोहित कर देता है, अपने पास कुछ भी नहीं रखता। राज़योग का ये राज़ समझने का है। जो राजयोग सिखाने वाला है, कौन है? प्रैक्टिकल में है या सिर्फ़ थ्योरी ही सिखाता है? (किसी ने कहा- प्रैक्टिकल में है) हाँ! शिव क्या है- थ्योरी मास्टर है या प्रैक्टिकल है? (किसी ने कहा- थ्योरी मास्टर है) वो खुद कहता है- बच्चे! मैं तो त्रिकालदर्शी हूँ; लेकिन तुम बच्चे क्या हो? मास्टर त्रिकालदर्शी हो। “रचयिता बाप ही रचना के आदि-मध्य-अंत की नॉलेज आकर देते हैं। तुम भी मास्टर त्रिकालदर्शी बनते हो।” (मु.ता.6.12.71 पृ.2 अंत) मैं सिर्फ़ त्रिकालदर्शी हूँ; तुम मास्टर त्रिकालदर्शी हो, तुम्हारी मास्टरी है। कैसी मास्टरी? किसको कहा जाता है मास्टर? जो प्रैक्टिकल करके दिखाए। आज भी दुनिया में परीक्षाएँ होती हैं, तो जो प्रैक्टिकल में फेल तो फेल। थ्योरी में सारे सब्जेक्ट्स में पास हो जाए, थ्योरी में टोटल ही पास हो जाए; लेकिन

प्रैक्टिकल में अगर फेल हो गया, तो क्या माना जाता है? फेल माना जाता है। तो बताया- तुम प्रैक्टिकल राजयोगी हो नंबरवार।

तो जो प्रैक्टिकल राजयोगी है, क्या राज़ भरा हुआ है? अरे, शिव बाप इस सृष्टि पर किसलिए आते हैं? (किसी ने कहा- राजयोग से राजाई की स्थापना करने) राजयोग से राजाई की स्थापना तो करने आते हैं; लेकिन उनका लक्ष्य है जो तीन मूर्तियों के द्वारा सम्पन्न होता है- स्थापना, पालना और विनाश। उन तीनों मूर्तियों में सबसे सशक्त और सबसे ऊँची स्टेज में रहने वाली मूर्ति कौन-सी है? शंकर। तो जो सबसे सशक्त मूर्ति है, जो परमधाम के बिल्कुल नज़दीक है, उसमें पहले आता है, बीच की मूर्ति में आता है या नीचे की मूर्ति में आता है? पहले किसमें आता है? (किसी ने कहा- ऊँच-ते-ऊँच में) ऊँचे ते जो ऊँची मूर्ति है उसी में आवेगा ना! क्यों? क्योंकि वो एक ही मूर्ति है इस सृष्टि रूपी वृक्ष में, जो निराकारी स्टेज के, निराकारी धाम के बिल्कुल नज़दीक है। तीसरी मूर्ति साकार दुनिया के नज़दीक है या निराकारी दुनिया के नज़दीक है? साकारी दुनिया के नज़दीक है। वो साकार है और वो निराकार है और बाप कहते हैं- "बच्चे! ऐसी प्रैक्टिस करो- एक सेकेंड में साकारी- एक सेकेंड में साकार कर्मेन्द्रियों से कर्म करने का अनुभव करने वाले और एक सेकेंड में क्या बन जाओ? निराकारी बन जाओ। निराकार ज्योतिबिन्दु की याद में प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियों से कोई रस लेने का अनुभव न हो, कुछ भी प्राप्ति का अनुभव न हो- ऐसी निराकारी स्टेज लेने वाली (मूर्ति) जो सृष्टि रूपी वृक्ष के झाड़ के ऊपर दिखाई गई है। नंगी है या देह रूपी कपड़े पहने हुए है? नंगी है। नंगी का मतलब क्या हुआ? निराकारी आत्मिक स्टेज में है और वो ही इस सृष्टि में ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है। ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है, जिसको हम शिवबाबा कहते हैं, इस सारी मनुष्य-सृष्टि का जो हीरो पार्टधारी है। कैसा है? जिसकी पूजा आज सारे भारतवर्ष में बहुत पुरानी है। सिर्फ़ भारत में ही नहीं, सारे विश्व की खुदाइयों में वो लिंग-मूर्तियाँ मिली हैं।

मूर्ति माने बड़ा रूप, मूर्त रूप और अमूर्त माने जिसकी मूर्ति न हो। तो वो क्या है? मूर्ति भी है माने साकार है; लेकिन साकार होते हुए भी उसका जो यादगार सात्विक रूप दिखाया गया, वो सोमनाथ मंदिर में दिखाया गया था। क्या था? हीरा दिखाया गया था। उसमें जो हीरा दिखाया गया, वो हीरा किसकी यादगार और जो पत्थर का लिंग दिखाया गया था, वो किसकी यादगार? बड़ा रूप किसकी यादगार और वो छोटा रूप किसकी यादगार? (किसी ने कहा- छोटा रूप निराकार शिवबाप की यादगार) निराकार बाप की यादगार! और बड़ा रूप? (किसी ने कहा- साकार) साकार की यादगार! माने जो बड़ा रूप है, वो मूर्तिमान शंकर की मूर्ति की यादगार है, जिसको हाथ, पाँव, नाक, आँख दिखाए जाते हैं और जो हीरा है वो शिवबाप की यादगार है? (किसी ने कहा- हाँ!) लेकिन शिवबाप हीरा अर्थात् पत्थर बनता है? (किसी ने कहा- नहीं) वो हीरा तो पत्थर होता है ना! अरे, नौ प्रकार के जो रत्न होते हैं, वो पत्थर होते हैं या नहीं होते हैं? (किसी ने कुछ कहा-...) तो नौ प्रकार के जो ब्राह्मण हैं, वो पत्थरबुद्धि बनते होंगे। शिवबाप न पत्थर बनता है और न पारस बनता है। पारस माने? पारसनाथ नाम पड़ता है। स्पर्श का बिगड़ा हुआ रूप पारस बन गया। स्पर्श माने छुआ और संग का रंग लगा- चाहे आँखों से छुओ, चाहे कानों से छुओ। कानों से भी सुनी हुई बात याद

आती है कि नहीं? माँ, बच्चे को याद करती है, तो बच्चा जो बोलता है, वो माँ के कान में पड़ता है तभी तो याद आता है। तो स्पर्शनाथ का मतलब ही है, स्पर्श से ऐसा जादू करने वाला, जिसके कोई भी शरीर के अंग को स्पर्श किया तो संग का रंग ज़रूर लगेगा। जिसने स्पर्श किया उसको संग का रंग नहीं लगेगा। जिन्हों-2 ने स्पर्श किया उनका संग का रंग उसको नहीं लगेगा; लेकिन उसको जो स्पर्श करेगा उसको संग का रंग ज़रूर लगेगा- ऐसा पारसनाथ यादगार है। जैनियों में यादगार है- पारसनाथ। जो 24 तीर्थंकर माने जाते हैं, उनमें एक तीर्थंकर का नाम है- पारसनाथ/स्पर्शनाथ। (किसी ने कहा- हीरा कौन है?) हीरा? (किसी ने कहा- पत्थर में जड़ा हुआ हीरा) साकार में हीरा! हीरो पार्टधारी कौन है? चारों युगों में, चारों सीन में ऊँचे-ते-ऊँचा पार्टधारी कौन है? (किसी ने कहा- शंकर) फिर? (किसी ने बीच में कहा- शरीर और आत्मा) हाँ! तो जो हीरा है वो है उसकी आत्मा। किसकी? शंकर की सम्पूर्ण आत्मा। उसकी सोमनाथ मंदिर में शिवलिंग के रूप में यादगार दिखाई गई थी। वो शिव नहीं है। वो शिव पत्थरबुद्धि बनने वाला हीरा नहीं है; क्योंकि वो तो न पत्थर बनता है, न पारस बनता है। उसका संग का रंग एकमात्र त्रिनेत्री आत्मा शंकर को लगता है तब पतित से पावन बनती है। निराकार शिव का संग का रंग दुनिया को लग सकता है? नहीं। उस निराकार शिव को तो दुनियावी दूसरे धर्म के लोग पहचानते भी नहीं, जीवन-कहानी को जानते भी नहीं, मानते भी नही। इसलिए अधूरे धर्मपिताएँ नं०वार अधूरा धर्म स्थापन करते हैं। कहते हैं- निराकार-3, क्या है प्रैक्टिकल में सो जानते ही नहीं। तो संग का रंग जिसका लगता है वो शरीरधारी ही होगा या बिना शरीर के होगा? (किसी ने कहा- शरीरधारी) वो हीरा शरीर से अटैच है और सृष्टि के आदि-मध्य में भी अटैच था, सृष्टि के अंत में भी अटैच रहता है।

वो अनंत है, अनादि है। उसका न अंत है, न आदि है। शास्त्रों में दिखाया गया- ''लिंग का आदि और अंत पहचानो। तो विष्णु जी महाराज नीचे की तरफ़ गए और ब्रह्मा जी महाराज ऊपर की तरफ़ गए। दोनों वापस आ गए (और कहा-) हमें आदि-अंत का कोई पता नहीं लगा।'' तो उसके आदि-अंत का कोई को पता नहीं। जैसे परिवार में बाप होता है, होता है ना! बाप बीज होता है ना! उस बीज में से सारा परिवार तैयार हुआ ना! (किसी ने कहा- हाँ!) माँ से ले करके छोटे-से-छोटा जो बच्चा है, वो भी उस बाप से ही निकला ना! तो जो बीज-रूप बाप है, वो 500/700 करोड़ मनुष्य-सृष्टि का बाप है। उसी में से सारी सृष्टि निकलती है, जो गीता में आज भी लिखा हुआ- ''विसृजाम्यहम्'' (9/7)- मैं सृष्टि के आदि में छोड़ता हूँ और जब महाविनाश होता है, सारी दुनियाँ की महामृत्यु का टाइम होता है, तो सभी आत्माएँ मेरे में समा जाती हैं। उस एक ही बीज से सब निकलते हैं और उसी में समा जाते हैं। क्यों भाई, उसमें क्यों समा जाते हैं? आत्मलोक में आत्माएँ समा जानी चाहिए! वो देहधारी जो निराकारी स्टेज में स्थिर हो जाता है, उसमें क्यों समा जाती हैं? क्योंकि मुरली में बोला है- तुम बच्चे परमधाम को भी इस सृष्टि पर उतार लेंगे। माने इस सृष्टि पर कोई परमधाम का अव्वल नंबर सैम्पल भी है जिसके लिए ही बोला- घर को याद करो, स्वर्ग को याद करो, मुझे याद करो। “अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।” (मु.ता. 15.7.66 पृ.3 आदि) भई, तीन-2 को याद क्यों करें? गीता में तो लिखा है- ''मामेकम् याद करो।'' (9/34) मुझ एक को याद करें, मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई, एक को याद करें

या तीन-2 को याद करें? (किसी ने कहा- एक को) तो ये दो-2 बातें कैसे? क्योंकि ब्राह्मणों की दुनिया में जब शिवबाप नई सृष्टि रचने आते हैं और रचाने के लिए, करन-करावनहार है ना; तो जब नई सृष्टि रचाने के लिए आता है तो वो बोलता है कि परमधाम को तुम बच्चे इस सृष्टि पर उतार लेंगे। तो उतारने वाले बच्चे नंबरवार होंगे या सब एक साथ उतारेंगे? (किसी ने कहा- नंबरवार) तो जो अव्वल नंबर बच्चा है जो परमधाम को इस सृष्टि पर उतारता है, परमधाम को इस सृष्टि पर उतारने का मतलब स्वयं आत्मिक स्टेज में स्थिर हो जाता है। कैसी स्टेज? जो पूजनीय शिवलिंग मंदिरों में यादगार दिखाई गई है। आत्माओं का बाप कहते हैं- न मैं पूज्य बनता हूँ, न मैं पुजारी बनता हूँ। "न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ।" (मु.ता. 22.5.73 पृ.2 अंत) तो जो मंदिरों में शिवलिंग रखा हुआ है, जिसकी पूजा होती है और हम जाके उसकी पूजा करते रहे, तो किस आत्मा की पूजा करते रहे? उसकी, जो कहता है- न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ या कोई और है, जो इस सृष्टि पर पहले नंबर में पूज्य बनता है और पहले नंबर में पुजारी बनता है? अरे, कोई है कि नहीं है? (किसी ने कहा- है, मनुष्य-सृष्टि का बाप) बोला- 10 वर्ष में लक्ष्मी-नारायण का जन्म माने प्रत्यक्षता होगी। तो 1976 में जिसका प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ, वो राम वाली आत्मा इस सृष्टि का बीज साबित हो जाती है, जो नर से नारायण बनता है और वो नर से नारायण तब ही बनता है जब अपन को निराकारी बीज-रूप स्टेज में स्थिर कर लेता है। तो पहले-2 निराकारी बीज-रूप में कौन स्थिर होता होगा? राम वाली आत्मा। जिसके लिए पिछले साल अव्यक्त वाणी में बोला- 18 जनवरी असली स्मृतिदिवस नहीं है। असली स्मृतिदिवस है 5 दिसम्बर, जब शिव बाप और बच्चे का पहली बार मिलन होता है। तो बताओ, वो 5 दिसम्बर क्यों बोला? 18 जनवरी असली स्मृतिदिवस नहीं है; क्योंकि 18 जनवरी जो है वो, साकारी स्टेज में रहने वाला ब्रह्मा है, जो साकारी शारीरिक स्टेज छोड़ता ही नहीं, स्थूल छोड़ता है तो सूक्ष्म ग्रहण कर लेता है। वास्तव में उस आत्मा के मिलन की बात है 5 दिसम्बर को, जो आत्मा पहले-2 बीज-रूप स्टेज में स्थिर हो जाती है और शिवबाप के साथ मिलन मनाती है। जो बीज-रूप आत्मा के लिए सन् 1976 के लिए इशारा किया कि सन् 76 में नर से नारायण बनने वाली आत्मा का जन्म होगा/प्रत्यक्षता होगी। माना जो 500/700 करोड़ मनुष्यात्माएँ हैं उनका, उन आत्माओं के बाप से मिलन, वो फर्स्ट मिलन है या आत्मा का देह से मिलन फर्स्ट है? आत्मा से आत्मा का मिलन फर्स्ट या आत्मा से देह का, देहधारी से मिलना फर्स्ट? किसको प्रियोरिटी देंगे? आत्मा से आत्मा को मिलने की प्रियोरिटी है।

तो वो शिव जो सदा आत्मा है, सदाशिव है; कभी देह बनता ही नहीं, वो शिव इस सृष्टि पर जब आता है, उस आत्मा पर पहले-2 फ़िदा होता है जिस आत्मा पर तुम सब बच्चे आशिक बनते हो। जो आत्मा सभी आत्माओं का बाप है, वो ही जिस आत्मा पर आशिक होगा तो सभी आत्माओं को किसके ऊपर आशिक होना पड़े? (किसी ने कहा- एक बाप के ऊपर) अरे, जिसके ऊपर वो ऊँच-ते-ऊँची आत्मा शिव आशिक हो गई, तो उसके ऊपर सबको आशिक होना पड़े या नहीं होना पड़े? (किसी ने कुछ कहा-...) उसका नाम क्या बताया मुरली में? एक शिवबाबा है माशूक और बाकी सब हैं आशिक। "बरोबर शिवबाबा बाबा है। उनको माशूक भी कहा जाता है। सभी मनुष्यमात्र आशिक हैं उस माशूक के।" (मु.ता. 3.7.88 पृ.1 अंत) माना तुम बच्चे एक शिवबाबा के आशिक हो। मैं भी आशिक हूँ एक शिवबाबा पर। तो तीन प्रकार की आत्माएँ संसार

में हो गईं। एक वो जो अक्षर है, कभी क्षरित नहीं होती, कभी पतित नहीं होती- 'शिव'; दूसरी वो आत्माएँ हैं जो क्षर हैं- 500/700 करोड़ जो भी मनुष्यात्माएँ हैं, वो सब क्षरित होती हैं और तीसरी एक और है, जो गीता में बोला है- ''परमात्मा इति उदाहृतः।'' (15/17) उसको परमात्मा कहा जाता है। परम माने आत्माओं के बीच में परम पार्टधारी आत्मा। शिव तो चार युगों में पार्ट बजाता ही नहीं, वो तो हीरो पार्टधारी है ही नहीं, तो उसको तो परमात्मा नहीं कह सकते और कहा भी जाता है- परमपिता परमात्मा या परमात्मा परमपिता? किसका नाम पहले? आत्माओं के बाप का नाम पहले और उसके बाद किसका नाम? (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि के बाप का) हाँ, मनुष्य-सृष्टि के बाप का नाम 'परमात्मा', जो दुनिया में आज भी लोग कह रहे हैं- ''आत्मा सो परमात्मा।'' परंतु गलती से समझ लिया है कि हर आत्मा परमात्मा (होती है)। ऐसी बात नहीं है! इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर एक ही आत्मा है जो परम पार्टधारी है, भले चारों सीन में, चारों युगों में कोई उसको पहचान नहीं पाता जब तक शिवबाप आ करके पहचान न दे। (जब ब्रह्मा द्वारा शिवबाप आ करके पहचान देते हैं) तो पहचाना जाता है। उससे पहले उस हीरो पार्टधारी को कोई भी नहीं पहचान सकता और वो हीरो पार्टधारी पहले अपने पार्ट को पहचानेगा कि दूसरी आत्माएँ उसको पहचानेंगी? (किसी ने कहा- पहले अपने पार्ट को) पहले हर आत्मा अपने 84 जन्म के पार्ट को पहचानेगी, फिर दूसरे पहचानेंगे, या तो बाप जाने! तो आत्माओं का बाप सर्वोपरि है और उसके बाद परमात्मा। वो परमात्मा मनुष्य-सृष्टि का बाप है, हीरो पार्टधारी है। वो हीरो पार्टधारी शिवलिंग के रूप में मंदिरों में पूजा जा रहा है। गलती से दूसरे धर्मपिताओं ने, उनके फॉलोअर्स ने निराकार को समझ लिया है और इस्लामियों ने तो वो गोल पत्थर ले जा करके काबा में लगा भी दिया, जिसका नाम 'संग-ए-असवद्' रखा। यहूदियों ने भी मान लिया कि वो लाल लाइट का गोला है, जिसे अंग्रेज़ लोग 'हैविनली गॉडफादर' कहते हैं। अरे, हैविनली गॉडफादर होगा तो हैविन को रचने वाला होगा या नहीं? हैविनली गॉडफादर क्यों? कैसे कहा जाएगा हैविनली गॉडफादर? हैविन की रचना करे तो हैविनली गॉडफादर या हैविन की प्रैक्टिकल में रचना न करे तो भी हैविनली गॉडफादर? प्रैक्टिकल में रचना करे तो हैविनली गॉडफादर। तो देखो, उसी को गीता में कहा गया- परमात्मा इति उदाहृतः। वो परमात्मा है, आत्माओं में परम पार्टधारी है। उसकी तुलना और आत्माओं से की जा सकती है जो पार्टधारी आत्माएँ हैं और वो (शिव) इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट नहीं बजाता। अकर्ता है या कर्ता है? वो तो अकर्ता है; और कर्ता कब बनता है? जिसमें प्रवेश करता है और उसको लक्ष्य देता है कि तुम्हें मैं आप समान बनाऊँगा। आप समान माने मैं ज्योतिबिंदु हूँ, निराकारी हूँ तो तुमको भी निराकारी बनाऊँगा।

तो जो नंबरवार में से सौ परसेंट अव्वल नंबर है, वो जब निराकारी बनता है तो उसकी यादगार शिवलिंग बनाई गई है, जो सार्वभौम है सारी दुनियाँ में, ख़ास भारतवर्ष में बहुत मान्यता प्राप्त है। वो शिवलिंग जो पुराने मंदिरों में बीच में रखा है और चारों तरफ देवताओं की मूर्तियाँ रखी हैं। इससे क्या साबित होता है? कि वो परम पार्टधारी है, वो परम सद्गुरु है। ''जब सद्गुरु मिला दलाल, सुंदर मेला कर दिया।'' सद्गुरु दलाल है, तो साकार है या निराकार है? साकार है और वो सुप्रीम टीचर भी है। टीचर भी सुप्रीम है तो मुख से टीच करेगा/व्याख्या करेगा तब ही टीचर बनेगा या बिना व्याख्या करे ऊँच-ते-ऊँचा टीचर बन जाएगा? (किसी ने कहा- व्याख्या करेगा) प्राइमरी स्कूल में जो तुलसीदास, सूरदास, कबीर के दोहे-

कवित्त पढ़ाए जाते हैं, उनको ऊपर के प्रोफेसर्स टीच करते हैं; प्राइमरी स्कूल के जो टीचर्स हैं वे उनका गुह्यार्थ नहीं बताते। तो ऐसे ही है कि शिवबाप ही एक टीचर है, एक ही पर्सनैलिटी के रूप में है; टीचर भी है, आदि में बीज बोने वाला बाप भी है और सद्गति देने वाला सद्गुरु भी है। पहले संकल्पों के आधार पर मन-बुद्धि की सद्गति करेगा या शरीर की करेगा? (किसी ने कहा- मन-बुद्धि की) तो पहले-2 टीचर के रूप में पढ़ाई पढ़ा करके, व्याख्या दे करके मन-बुद्धि की सद्गति करता है कि सत् संकल्प चलें; दुष्ट संकल्प न चलें। टीचर का काम क्या है? जो भी प्रोज़/पोयट्री है, उसकी व्याख्या करना। व्याख्या करने वाले को नाम दे दिया है- कपिल मुनि।

उसकी यादगार बनी हुई है कम्पिल में। जिसकी बसाई हुई नगरी का नाम 'काम्पिल्य नगर' पड़ा। शास्त्रों में ये लिखा है कि ''जो कपिल मुनि थे, वो ऐसा अव्वल नंबर मनन-चिंतन-मंथन करने वाले थे, जिन्होंने 'सांख्य शास्त्र' रचा।'' सांख्य= सह+आख्या, आख्या माना व्याख्या। व्याख्या के साथ हर बात, हर शब्द बताते थे। व्याख्या के साथ सारे शास्त्रों की जिन्होंने रचना की। देखो, आदि से देख लो, द्वापरयुग के आदि से। वेदों की रचना किसने की? (किसी ने कहा- व्यास) वेदव्यास कहा जाता है। लेकिन वेदों से भी पहले कोई और ग्रंथ था जिसकी रचना की गई। वो कौन-सा ग्रंथ था? श्रीमद्भगवद्गीता। यज्ञ के आदि में भी, जब रुद्र-ज्ञान-यज्ञ शुरू हुआ तो गीता के अर्थ ही बैठ करके सुनाते थे। जो आदि में सो अंत में होगा। दुनिया नहीं मानने वाली है, दुनिया के विद्वान-पंडित-आचार्य नहीं मानने वाले हैं; उन्होंने गाँठ बाँधके रख ली- ''ब्रहमा भी उतर आए तो भी हम शास्त्रों को नहीं छोड़ेंगे।'' शास्त्रों में मुख्य शास्त्र गीता है। गीता की टीकाएँ दुनिया में सबसे जास्ती हुई हैं। दुनिया के जितने भी धर्मग्रंथ हैं, उनकी इतनी टीकाएँ नहीं हुईं/व्याख्याएँ नहीं हुईं, जितनी ज़्यादा टीकाएँ गीता की हुईं। तो गीता में ज़रूर कोई रहस्य है ना! मनुष्यों ने जो गीताएँ लिखी हैं, मनुष्य विकारी तो उनकी व्याख्याएँ रूपी टीकाएँ भी विकारी हो गईं। इसलिए गायन है- ''कै समझे कवि, कै समझे रवि''। या तो ज्ञान-सूर्य स्वयं इस सृष्टि पर आ जाए तो इस गीता रूपी जो सृष्टि की पहली रचना ग्रंथ है, उसकी सही व्याख्या कर सकता है या तो वो कवि की आत्मा ही इस सृष्टि पर आ जाए तो उसका सही अर्थ निकलेगा। बाकी कोई भी टीकाकार, कोई भी देहधारी गुरु गीता की सही व्याख्या नहीं कर सकता और है भी ऐसे ही! कोई भी गीता उठाके देख लो, कॉण्ट्रैडिक्शन मिलेगा- एक की व्याख्या दूसरे की व्याख्या को काट रही है। जैसे माधवाचार्य की गीता कहती है- ''आत्माएँ अनेक हैं और परमपिता एक अलग है।'' और शंकराचार्य की गीता कहती है ''एकोऽब्रह्म द्वितीयोऽनास्ति''- एक ही है, दूसरा कुछ है ही नहीं। बताओ, कितना भारी अंतर, विरोध मूल रूप में ही (हो गया)! तो सच्चाई कैसे मिलेगी/सत्य कैसे मिलेगा? इसलिए मुरली में बोला- बाप का परिचय बाप ही दे सकता है। "वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।" (मु.ता. 8.10.68 पृ.2 मध्यादि) जो ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है जिसका कोई बाप नहीं, उस बाप का परिचय कौन दे सकता है? वो बाप स्वयं इस सृष्टि पर आए तब ही सही परिचय मिलेगा; नहीं तो किसी को वो परिचय मिल ही नहीं सकता और वो ही होता है। आदि में भी पिऊ के द्वारा उस गीता की व्याख्या सुनाई जाती थी जिसे विधर्मी ब्राहमणों ने, कम कुरी वाले ब्राहमणों ने जमीनदोज़ कर दिया। शूटिंग हो गई। मुसलमानों ने क्या किया? भारत में आ करके भारत के शास्त्रों को जमीन में गाड़ दिया, भाड़ में

भून दिया, फाड़-2 के नदी में बहा दिया। तो सच्चाई को नष्ट करने वाले भी इसी मूल रूप में इसी ब्राह्मणों की दुनिया में हैं और सच्चाई को पोषण करने वाले तुम बच्चे भी (इसी दुनिया में) हो जिनके सहयोग से सतयुग की स्थापना होती है।

बताया- उस बाप को याद करो। त्रिमूर्ति के चित्र में ये क्लैरिफिकेशन कई दिनों से बाबा दे रहे हैं- त्रिमूर्ति के चित्र में बाप का परिचय दो। “पहले-2 तो त्रिमूर्ति पर ही समझाना है। .... पहले-2 तो परिचय देना है बाप का।” (मु.5.11.71 पृ.1 अंत) तो नीची कुरियों की ब्रह्माकुमारियाँ क्या करती हैं? 32 किरणों वाला शिवलिंग का चित्र ले जाती हैं, पहले वो प्रदर्शनी में रख देती हैं। क्या परिचय देती हैं? ये हमारा-तुम्हारा सबका बाप है; ये जो शिवलिंग है, इसके 32 गुण हैं। अरे, जो निर्गुण है, जो निराकार है, निर्गुण-निराकार गाया हुआ है, वो गुण-अवगुण वाला है? उसमें गुण और अवगुण हो सकते हैं क्या? नहीं, वो तो निर्गुण है और उसके बच्चे भी निर्गुण बालकों की संस्था है। वो निर्गुण बालक आज भी अंदर से बोल रहे हैं- ‘‘आपे ही तरस परोई!’’ हमारे अंदर इतनी ताकत नहीं है, जो निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी बन जाएँ, मनुष्य से देवता बन जाएँ! तो बाबा मुरली में मिसाल देते हैं- भक्तिमार्ग में एक निर्गुण बालकों की संस्था भी थी। “यहाँ फिर निर्गुण बालक की संस्था भी है।” (मु.26.7.67 पृ.3 आदि) वो नाम कैसे पड़ा? ये निर्गुण बालकों की संस्था द्वापर-कलियुग में होती है या सतयुग-त्रेता में? द्वापर-कलियुग में होती है और उसकी शूटिंग कहाँ होती है? (किसी ने कहा- संगम में) यहाँ होती है। संगम में हम ऊपर की उल्टी सीढ़ी चढ़ रहे हैं। उल्टी सीढ़ी में बताया- जब तुम बच्चे त्रेतायुगी सीढ़ी में प्रवेश करेंगे तो तुम्हारा डिस्चार्ज होना बंद हो जाएगा। तो किसी का डिस्चार्ज होना बंद हुआ? (किसी ने कहा- नहीं हुआ) कोई नहीं कहेगा। छाती ठोंक के कोई नहीं कहेगा कि हमारा डिस्चार्ज होना बंद हो गया! इसका मतलब हम अभी द्वैतवादी द्वापरयुग की सीढ़ी में ही चल रहे हैं, या त्रेता में प्रवेश कर गए? (किसी ने कहा-द्वापर में ही हैं) अंदर से आवाज़ आ रही है- ‘आपे ही तरस परोई, हमारे में ताकत नहीं है!’

तो जो आपे ही तरस परोई, आप ही हमारे पर तरस करो तो कौन तरस करे? कौन कृपा करे? किससे कहते हैं? (किसी ने कहा- साकार होने से ही तरस कर सकते) हाँ, वो निराकार तो पारसनाथ नहीं बनता है/स्पर्शनाथ नहीं बनता है। उसके स्पर्श करने से कोई भी धर्मपिताएँ, जो निराकार को मानने वाले हैं, वो देवता नहीं बनते हैं। तुम बच्चे देवता बनते हो, नर से नारायण-जैसे बनते हो। कब बनते हो? (किसी ने कहा- संग करने से) अरे, संग तो तब करेंगे जब पहचानेंगे! 1976 से पहचाना क्या? 81 की अ.वा. में बोला- तेरहवें में तेरा होना चाहिए। इसका मतलब तेरहवें तक भी कोई तेरा नहीं हुआ। क्यों नहीं हुआ? क्योंकि कोई ने पहचाना ही नहीं। तेरहवें में जो तेरा हुआ वो जगतपिता की जगतजननी प्रसिद्ध हो जाती है। कोई भी परिवार बनता है, परिवार का निर्माण होता है पिता के द्वारा, तो पहला-2 कौन-सा भांती सहयोगी बनता है? माता बनती है। तो वो जगतपिता, सारे मनुष्य-सृष्टि का पिता 1976 से प्रत्यक्षता वर्ष में प्रत्यक्ष तो होता है; लेकिन कोई उसको पहचानता नहीं था जो पहचान करके अर्पणमय हो जाए; तन से, मन से, धन से, संकल्प से, समय से, संबंधों से, संपर्कियों से अर्पण हो जाए। तो बताया- तेरहवें आया है तो तेरा होना

चाहिए। तो तेरा हुआ या नहीं हुआ? अगर कहें- नहीं हुआ, तो ये इतने सब कहाँ से बैठे हुए हैं? जवाब दो। इतने सब एडवांस पार्टी में क्यों बैठे हुए हैं? कहाँ से बैठ गए? कैसे प्रत्यक्षता रूपी जन्म लिया कि हम रुद्रमाला के मणके हैं? (किसी ने कहा- पहचानके) तो वो ही बताया कि पहले-2 माँ पहचानती है और पहचान करके फिर पारसनाथ/स्पर्शनाथ का स्पर्श करती है। किसलिए? अरे! संग के रंग से पावन बनने के लिए। इसलिए उस समय से ही भक्तिमार्ग में पति के लिए ये गायन चलता है, पति माने जो रक्षा करता है, उसके लिए ये गायन चलता है, ''तुम्हीं मेरे सब-कुछ हो, तुम्हीं मेरे पति-परमेश्वर हो।'' तो बाद में सभी मनुष्यमात्र ने-''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः'' (गीता 3/23)- सभी मनुष्य ये समझके बैठ गए- ये पत्नी है, हम इसके पति-परमेश्वर हैं। अब बताओ- परम ईश्वर एक होगा, जन्म-जन्मांतर एक होगा या अनेक होंगे? (किसी ने कहा- एक होगा) जो एक है पति-परमेश्वर, उस एक का गायन है, सबका गायन नहीं है।

वो प्रैक्टिकल में पति-परमेश्वर, इस मनुष्य-सृष्टि में जो राजघराने में आने वाली आत्माएँ बनती हैं, कोई-न-कोई जन्म में राजा-रानी बनती तो हैं, उन आत्माओं को राजयोग सिखाता है। कैसा राज़योग? ऐसा राज़ सिखाता है कि संग के रंग से सारी दुनियाँ बिगड़ती भी है और सुधरती भी है; लेकिन किसके संग के रंग से? एक ऊँचे-ते-ऊँचे को पहचान कर उसके संग के रंग से दुनिया सुधरती है और उसके भूलने के बाद अनेकों से संबंध जोड़ने से, अनेकों के साथ इन्द्रियों का स्पर्श करने से दुनिया बिगड़ती है, व्यभिचारी बनने (लग पड़ती है)। सतयुग के उन आठों नारायणों का भी द्वापरयुग में आ करके क्या हाल हो जाता है? (द्वापरयुग से) जो दूसरे-2 धर्मपिताएँ उतरते हैं, संबंध जोड़कर उनकी माता बन जाते हैं, बाप को भूल जाते हैं। जबकि वो मनुष्य-सृष्टि का बाप द्वापरयुग में भी इसी सृष्टि पर हीरो पार्टधारी बनकर रहता है। फिर भी न पहचानने के कारण क्या करते हैं? जो आया; भारतवासियों की ये आदत है- सुनी-सुनाई बातों से भारतवासियों ने दुर्गति पाई। "सुनी-सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।" (मु.ता.30.1.71 पृ.4 आदि) जो पावरफुल धर्मपिताएँ आए उन्होंने जो सुनाया, बस, सुन करके प्रभावित हो (गए)। आज भी माताओं की ये आदत पड़ी हुई है। बाप का पूरा ज्ञान ले लेंगी, सात्विक स्टेज में जान लेंगी- ये मेरा बाप है, ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है। फिर क्या होता है? दूसरों के संसर्ग-सम्पर्क में आने लगते हैं। बाप ने कहा- एक से सुनना चाहिए, अनेकों से सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। "मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।" (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) लेकिन माताएँ क्या करती हैं ख़ास? जिसने जो ज्ञान कान में डाल दिया- हाँ, यही बात है, हमने भी ऐसे ही अनुभव किया, सच्ची बात है, बस दूसरा गुरु बना लिया। फिर तीसरा आया, तीसरे ने तीसरी बात सुनाई, चौथे ने चौथी बात सुनाई। जो ऊँचे-ते-ऊँचे की बात हम सुनते हैं उन बातों पर ध्यान नहीं देते, तो संग का रंग अनेकों का लगेगा/एक का लगेगा? संग का रंग अनेकों का लगता है।

इनको कहते हैं 'भारतवासी'। कहाँ के वासी? (किसी ने कहा- भारत) 'भा' माने ज्ञान की रोशनी में जो 'रत' माने लगा रहता है- व्यास, राम वाली आत्मा। काहे में लगी रहती है? ज्ञान की रोशनी में लगी रहती है। चाहे कर्मणा से, चाहे वाचा से, चाहे संकल्पों से, चाहे वायब्रेशन से- ज्ञान की ही रोशनी में लगी

रहती है वो आत्मा, जिसका नाम 'भारत' है चैतन्य; जड़ जमीन का नाम नहीं है। जड़ जमीन ज्ञान की रोशनी में रत नहीं रहती; कोई आत्मा है जिसके नाम पर भारतवासी बने। कहाँ के वासी? भारत के रहने वाले वासी माने जो मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष है, उसमें नीचे से ले करके ऊपर तक एक ही तने के वासी- न इधर (दाएँ तरफ़) कन्वर्ट होते, न उधर (बाएँ तरफ़) की डाली में कन्वर्ट होते। अगर उधर (बाएँ तरफ़) की डाली में कन्वर्ट हो गए तो विदेशी धर्म में चले गए, इधर (दाएँ तरफ़) की डाली में कन्वर्ट हो गए तो बुद्ध-शंकराचार्य-सिक्ख आदि बन जावेंगे। कहाँ के वासी? नीचे से लेकर ऊपर तक एक ही तना जाता है, उसके मन-बुद्धि से वासी हैं। मन-बुद्धि किसमें धरी रहती है? (किसी ने कहा-ऊपर की ओर) वो ही मेरा परमधाम है, मेरा बाप है। बाप से ही सारे बच्चे निकलते हैं माता के द्वारा। कोई पूछता है- किससे जन्म हुआ? तो क्या बताते हैं? माता से जन्म हुआ। अरे, माता से जन्म हुआ, माता में भी बाद में आया या पहले ही आ गया था? (किसी ने कहा- बाद में आया) माता की बात बाद में। माता से भी पहले, जो भ्रूण तैयार होता है, उस भ्रूण का जो बीज-रूप है, जिसे शुक्राणु कहते हैं, वो पहले धरणी में डाला जाता है, धरणी रूपी माता कही जाती है, तब बाद में प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेता है। तो पहले-2 उस माता से तुम बच्चों का जन्म हुआ। चन्द्रवंशी, इस्लामवंशी, बौद्धीवंशी बाद में पैदा होते हैं, पहले-2 कौन पैदा होते हैं? (किसी ने कहा- सूर्यवंशी) प्रैक्टिकल में पैदा हुए उस जगदम्बा रूपी धरणी से या नहीं हुए? हुए। तो वो हमारा बाप है, वो हमारी माता है। माता कौन है? जगदम्बा। जगदम्बा के भी दो रूप हैं- एक है शरीर, पाँच तत्वों का संघात, पाँच तत्वों का बढ़िया-ते-बढ़िया नमूना। चित्रों में देवियों के बीच में कोई देवी बहुत सुंदर दिखाई जाती है? कौन? दुर्गा। दुर्गा को दिखाते हैं ना! दुर्गा ही तमोप्रधान बनती है तो महाकाली बनती है और पूर्वी ज़ोन में तो बहुत प्रसिद्ध है। सारे जगत में जितने भी धर्म हैं और धर्मों के फॉलोअर्स हैं, सबका मूल अर्थात् आधार रूप में जन्म देने वाली वो जगदम्बा है। तुम बच्चों का अव्वल नंबर है, बीच का नंबर है या फड्डी नंबर है? अव्वल नंबर है। तो बड़े बच्चे हुए या छोटे बच्चे हुए? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे) अर्थात् रुद्र-ज्ञान यज्ञकर्ता रुद्र बाप के बड़े बच्चे रुद्रगण ही नई सृष्टि में बड़े बच्चे हुए।

तो सुख और शांति का, मुक्ति और जीवनमुक्ति का जो बेहद के बाप का बेहद का वर्सा है, वो तुमको पहले मिलेगा, बड़े बच्चों को या दुनिया के दूसरे धर्म वालों को मिलेगा? जीवनमुक्ति माने जीवन में रहते दुख-दर्दों से मुक्त, सुख का वर्सा और मुक्ति का वर्सा; देह से, देह के विकारों से मुक्ति। देह से आत्मा अलग हो गई, डिटैच हो गई, उसे कहेंगे मुक्ति। परमधामवासी हो गई। इस सृष्टि पर पहला नंबर/अव्वल नंबर का परमधाम कौन है? अरे! (किसी ने कहा- साकार बाप का शरीर) हाँ, साकार बाप का जो शरीर है, मनुष्य-सृष्टि के बाप का जो रथ है, वो ही हमारा 'परमधाम' है। उस परमधाम रूपी धरणी माता परमब्रह्म, गीता 14/3 में भी है- ''मम योनिः महत् ब्रह्म......, उसमें से ही हम सब मनुष्यात्माएँ नंबरवार इस सृष्टि पर आती हैं और सब महामृत्यु के समय उसी में समा जाती हैं। गीता का श्लोक 9/4 ''अव्यक्त मूर्तिना'' उठाके देख लो। बाप भी यही बात बताते हैं कि उस बाप को पहचानो जिससे तुमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। "बेहद के बाप को पहचानो और राजाई लो।" (मु.ता. 7.11.68 पृ.3 अंत) मैं जीवन में/84 के चक्र में आता हूँ क्या? वो क्या बोलता है? मैं जीवनमुक्ति लेता हूँ? नहीं। तो जो धनवान बाप होगा वो

धन का वर्सा देगा, मल्टीमिलियनायर होगा तो मल्टीमिलियन का वर्सा देगा, अरबपति होगा तो अरब का वर्सा देगा। जिसके पास जीवनमुक्ति है ही नहीं, वो जीवन में रहते जीवनमुक्ति का वर्सा देगा? नहीं देगा। तो वो कौन है, उसको पहचानो। उसकी पहचान वो ही आ करके देता है। कौन? वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत। भगवंत नहीं कहें, ऊँचे-ते-ऊँचा बाप कहें। वो आ करके परिचय देता है कि राजयोग सीखो जिस योग में राज़ भरा हुआ है। उससे योग लगाएँगे, लगन लगाएँगे, मन-बुद्धि का लगाव लगाएँगे, इन्द्रियों का लगाव लगाएँगे, तन का लगाव लगाएँगे, धन का लगाव लगाएँगे, तन के संबंधियों का भी उससे लगाव लगाएँगे तो रिज़ल्ट क्या आएगा? सब-कुछ अर्पण करेंगे तो 21 जन्म का पूरा वर्सा मिलेगा या नहीं मिलेगा? मिलेगा।

तो उस मनुष्य-सृष्टि के साकार बाप का परिचय देता है। किसके द्वारा? (किसी ने कहा- साकार बाप के द्वारा) हाँ, ऐसे नहीं, दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा हमें परिचय मिल गया। सन् 1973 से 76 तक अथवा 83 तक भी मनुष्य-सृष्टि के बाप का किसी को परिचय मिल गया? मिल गया तो उसका बन गया? नहीं बना। तो बताया कि मनुष्य-सृष्टि के बाप का परिचय, बाप के सिवाय और कोई दे ही नहीं सकता। मनुष्य-सृष्टि की जो पहली आत्मा है उसको आत्माओं के बाप ने परिचय दिया। किसने पाया परिचय? मनुष्य-सृष्टि के बाप माने राम वाली आत्मा ने। वो राम वाली आत्मा, आत्माओं के बाप का परिचय पाती है। कौन पाती है पहले? राम वाली आत्मा जो आत्माओं में बड़ा भाई है। है या नहीं? (किसी ने कहा- है) तो दादा हुआ कि नहीं? (किसी ने कहा- हुआ) और आत्माओं के बीच में बाप कौन हुआ? शिवबाप। अभी तक 'बापदादा' किसको कहते थे? (किसी ने कहा- राम-कृष्ण वाली आत्मा) उनको बाप-दादा कहते थे; लेकिन उससे भी पहले अव्वल नंबर के बाप-दादा कौन हैं? शिवबाप और राम वाली आत्मा दादा, सबसे बड़ा भाई। शिवबाप आएगा तो अपना वर्सा बड़े बच्चे को देगा या छोटे बच्चों को देगा? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे को) दुनिया में ये परम्परा चली आई, हिस्ट्री में, इंडिया में जितने भी राजाएँ हुए, सबने अपना राजाई का वर्सा किसको दिया? बड़े बच्चे को दिया। ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः'' (गीता 3/23)- मेरे रास्ते का ही दुनिया अनुगमन करती है जो भगवान ने रास्ता बनाया। तो देखो, शिवबाप ने अपना अखूट ज्ञान-धन का वर्सा किसको दिया? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे, बाप समान बच्चे को) बड़ा बच्चा कौन? राम वाली आत्मा को दिया।

दादा लेखराज द्वारा शिव की जो भी मुरलियाँ आईं, उन मुरलियों का राम वाली आत्मा ने मनन-चिंतन-मंथन किया या कोई और आत्मा ने भी किया? मनन-चिंतन-मंथन करके अपने पार्ट को पहचानने की बात है। कोई ने पहचाना? पहले 7 वर्षों में 1976 से ले करके 76-77-78-79-80-81, 82 तक कोई मनुष्यमात्र ने अपने पार्ट को पहचाना कि सृष्टि रूपी रंगमंच पर मेरा ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट क्या है? अरे! पहचाना? (किसी ने कहा- नहीं पहचाना) अरे, क्यों नहीं कहते- कृष्ण वाली आत्मा ने पहचाना, जो मनुष्य-सृष्टि का पहला पत्ता है! उसने नहीं पहचाना? वो नहीं कहता था कि मैं सतयुग में जाके प्रिंस बनूँगा/कृष्ण बनूँगा? पहचाना कि नहीं पहचाना? पहचाना। लेकिन वो साथ-2 ये भी अभी तक मानता चला आ रहा है कि मैं ही गीता का साकार भगवान हूँ। तो पहचाना? (किसी ने कहा- नहीं पहचाना) वो 'शिवोऽहम्' कह करके बैठ गया,

'आत्मा सो परमात्मा' कहके बैठ गया। तो उसने पहचाना या मुग़ालते में आ गया? मुग़ालते में आ गया। पहचाना न पहचाना बराबर हो गया। जैसे इस मनुष्य-सृष्टि में आज भी लोग कहते हैं- शिवोऽहम्, आत्मा सो परमात्मा, अहं ब्रह्मास्मि- मैं ही ब्रह्मा हूँ। तो ईश्वर बाप को पहचाना या मुग़ालते में आ गए? सब मुग़ालते में आ गए। तो जिसने आत्माओं के बाप को पहचाना और पहचान करके उसकी जो पहली पढ़ाई है; आत्मा के बाप की पहली पढ़ाई क्या है? मैं ज्योतिबिंदु आत्मा, तुम आत्मा। ये आत्मिक स्थिति में प्रैक्टिकल में टिक जाने की पढ़ाई, जिस स्थिति में आत्मा को ज्योतिबिंदु के सिवाय कोई संकल्प न आवे, निःसंकल्प, ऐसी स्टेज बने, तो पढ़ाई प्रैक्टिकल में हुई। अगर घड़ी-2 दूसरे संकल्प आ जाते हैं- देह के, देहधारियों के, देह के पदार्थों के, देह के संबंधियों के संकल्प आते-जाते रहते हैं, तो कहेंगे आत्मा बने? (किसी ने कहा- नहीं) कम-से-कम चार-छः मिनट ऐसी निःसंकल्प स्टेज तो बने। कितने साल हो गए? (किसी ने कहा- 30) अरे, बाप का बच्चा बने कितने साल हो गए? मनुष्य-सृष्टि के बाप का बच्चा बने या नहीं बने? (किसी ने कहा- बने) तो सबका अपना-2 अलग है कि हम इतने साल के बच्चे हो गए, हम इतने साल के बच्चे हो गए, जब से हमने बाप के घर में जा करके निश्चय रूपी जन्म लिया। बच्चा बाप के घर में जाके जन्म लेता है तभी बच्चा कहा जाता है ना! प्रत्यक्षता रूपी जन्म न हो, पेट में ही रहे तो जन्म कहा जाता है? (किसी ने कहा- नहीं कहा जाता) तो हरेक आत्मा जो भी एडवांस ज्ञान में है, वो निराकारी बाप का बच्चा बनी? मनुष्य-सृष्टि का वो निराकारी बाप, शिव समान जो अपने को निराकारी स्टेज में स्थिर कर लेता है।

कितने लंबे समय से अव्यक्त वाणी में बोला- प्रैक्टिस करो- अभी-2 आकारी, अभी-2 साकारी, अभी-2 निराकारी। "सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी। साकार में आते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकें। ... इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े, सिर्फ अमृतवेले नहीं। बीच-2 में यह अभ्यास करो।" (अ.वा.10.12.92 पृ.117 मध्य) तो कोई तो मुरली की उस बात को पकड़के ध्यान में रखेगा या नहीं रखेगा? या फ़ालतू ही बोल दिया? कोई तो रखेगा! तो जो रखने वाले नंबरवार बच्चे हैं, वो 40 साल के बाद 8 प्रत्यक्ष होते हैं। जो मुरली में बोला- तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगते हैं। "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।" (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो 50 वर्ष कब पूरे होंगे? 2028 में। जब वो वर्ष पूरे होंगे तो तुम बच्चों का माला रूपी संगठन तैयार हो जाएगा और तुम बाप के गले का हार बन जावेंगे। स्थूल फूलों की माला का हार बनेंगे या प्रैक्टिकल में भी हार बने हैं, जैसे बच्चा बाप के गले का हार बन जाता है? प्रैक्टिकल में हार बने होंगे, प्रैक्टिकल में संग का रंग लिया होगा तब बनेंगे या ऐसे ही बन जाएँगे? (किसी ने कहा- प्रैक्टिकल में संग किया) प्रैक्टिकल में बाप का बच्चा वो जिसके लिए बाप का धंधा सो बच्चों का धंधा हो। आत्मा का धंधा और देह का धंधा, देहधारी बापों का धंधा और आत्मिक स्टेज में जो स्थिर हो जाए, जिसकी यादगार शिव के मंदिर में रखी हुई है, उस बाप का बच्चा बनना, प्रैक्टिकल में होगा तब ही बच्चा बनेंगे या बिना प्रैक्टिकल के बच्चा बन जाएँगे? (किसी ने कहा- प्रैक्टिकल में बच्चा बनें) कैसे प्रैक्टिकल होगा? अरे! अरेऽऽ! (किसी ने कहा- बाप को पहचानना पड़े) पहचानना पड़े! पहचाना ही नहीं अभी तक? (किसी ने कहा- निश्चय होना) अभी निश्चय ही नहीं हुआ? निश्चय-पत्र क्यों लिख दिया- झूठे ही, बाप को ब्लफ देने के लिए? (किसी

ने कहा- अभी ब्राह्मण हैं ना बाबा!) अभी ब्राह्मण हैं, नीची कुरी के ब्राह्मण हैं! ऊँची कुरी के सूर्यवंशी ब्राह्मण नहीं बने! वो सूर्य के बच्चे नहीं बने जिसके लिए गीता में लिखा है- ''मैं जब आता हूँ पहले-2 सूर्य को ज्ञान देता हूँ।'' उस सूर्य के बच्चे नहीं बने अभी? (किसी ने कहा- बने तो हैं बाबा, आज निश्चय, कल अनिश्चय...) आज निश्चय, कल अनिश्चय और अभी आख़िरी साल आ गया, 40 साल पूरे हो रहे हैं, तो माया का फ़ाइनल पेपर होगा तो फेल हो जाएँगे या पास हो जाएँगे? (किसी ने कहा- फेल हो जाएँगे) तो फिर? (किसी ने कहा- नम्बरवार तो बनेंगे ना!) माने आपने पक्का कर लिया है कि हम 16 हज़ार में नंबरवार 16 हज़ारवाँ नंबर लेंगे, ऐसा? वो भी नहीं हुआ तो 9 लाख में नंबर ले लेंगे। नौ लाख तो आत्मा बनेंगे ही! साढ़े चार लाख प्रवेश करने वाले और साढ़े चार लाख वो जिनमें प्रवेशता होती है। वो सारे ही नौ लाख आत्मिक स्थिति में महामृत्यु/महाविनाश होने के टाइम तक, अंतिम समय तक आत्मा बनेंगे या नहीं बनेंगे? बनेंगे। तो पक्का कर लिया कि नंबरवार ही रहेंगे? (किसी ने कहा- अव्वल नंबर ही रहेंगे) अरऽऽ! ये तो बड़ी जल्दी हाइजम्प लगा दी! (किसी ने कुछ कहा-...)

चलो, तो वो राजाओं की बात हो रही थी कि राजाएँ अपने घर में मंदिर बनाते हैं और मंदिर में जा करके माथा ज़रूर टेकते हैं। उसकी शूटिंग कहाँ करेंगे? यहाँ संगमयुग में वो राजाएँ शूटिंग कर रहे होंगे कि नहीं कर रहे होंगे? (किसी ने कहा- कर रहे होंगे) अपने मन-मंदिर में किसको बसा के रखेंगे, कौन-सी मूर्ति को बसा के रखेंगे? जिन बच्चों के लिए बाबा ने बोला- जो पतित से पावन बनते नहीं हैं वो मेरे को बुलाते नहीं है। बाबा! ज़ल्दी आ जाओ, हमारी अवस्था खराब हो रही है! वो बुलाते भी हैं। क्या कह करके बुलाते हैं? पतित-पावन सीता-राम का नाम एड करते हैं। राधा-कृष्ण का नाम तो नहीं एड करते? नहीं करते। सीता-राम का ही गायन है- हे पतित-पावन! आओ। इसका मतलब राम-सीता की आत्माएँ निमित्त बनती हैं- पतितों को पावन बनाने के लिए। कैसे निमित्त बनती हैं- साकार में या निराकार में या आकार में भूत-प्रेत बनके? साकार में निमित्त बनती हैं। उनके संग के रंग में आ करके तुम बच्चे पतित से पावन बनते हो। ये है संग के रंग की बलिहारी। दुनिया के सारे धंधे छोड़ करके बाप का धंधा करेंगे, बाप के संग रहेंगे तो संग का रंग भी लगेगा और दुनिया का संगदोष-अन्नदोष भी नहीं लगेगा। संगदोष और अन्नदोष से बचे रहेंगे या लगे रहेंगे? (किसी ने कहा- बचे रहेंगे) संगदोष और अन्नदोष से बचे रहने की बलिहारी है।

द्वापरयुग से विधर्मी धर्मपिताओं के संगदोष और अन्नदोष में आ गए, जो विधर्मी धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स स्वर्ग को देखते भी नहीं। वो तो द्वापर में परमधाम से आते हैं, स्वर्ग ख़त्म हो जाता है। देखते भी नहीं, जानते भी नहीं, मानते भी नहीं, ऐसे नास्तिक बन जाते हैं। तो उनके संग के रंग में आने से हम भारतवासी, देवता से 'हिन्दू' अपन को कहलाने लगे और हिन्दू ही दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हुए; दूसरे धर्म वाले कभी कन्वर्ट नहीं होते। भारतवासी जो देवात्माएँ थीं, वो ही द्वापरयुग से दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होती रहीं और भारतवासियों की दुनिया में संख्या कम हो गई और दुनिया वालों की संख्या बहुत बढ़ गई। अब क्या करें, वो दुनिया वाले हमारे ऊपर हावी हो गए, हम दुनिया वालों के गुलाम बन गए! कैसे गुलाम? जो खिलाए पैकेट वाला भोजन, फास्ट फूड, उसके खाने के आदी बन गए। डबल रोटी खाएँगे। खाएँगे कि

नहीं? (किसी ने कहा- खाएँगे) पसंद आती है कि नहीं? वाह! दूध पिएँगे तो जरसी गाय का दूध पिएँगे, जो विदेशों से आई हैं। जिस जरसी गाय का दूध पीने से दुनियाभर की बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। देशी गाय का दूध नहीं पिएँगे, देशी गायों को काटने के लिए डाल देंगे मुसलमानों/क़साइयों के पास। बेहद का शिव बाप कहते हैं- उन जानवर गऊओं की बात ही नहीं है! ये तो भक्तिमार्ग में जानवर गऊओं को उन्होंने अपना लिया है। कौन-सी गऊओं की बात है? ये चैतन्य मानवीय गऊओं की बात है। जो कसाई घर बनाए हुए हैं, (जिन्हें) बाबा कहते हैं धर्मशालाएँ, उनमें इन चैतन्य गऊओं की शादियाँ होती हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- होती हैं) वो कोसघर हैं। शादियाँ करा के उन गऊओं को काट देते हैं। उनकी जो आदत है- वो जो राक्षसी इन्द्रियों का सुख है, भ्रष्ट इन्द्रियों का सुख लेने का आदी बनाय देते हैं। समझो, मर गईं। फिर दुनिया में उन्हें कुछ भी, कोई ईश्वर का ज्ञान अच्छा नहीं लगता। ऐसा बनाय देते हैं, गऊकसी कर देते हैं। अभी भक्तिमार्ग में भी जानवर गौओं का आंदोलन शुरू हुआ है- गऊकसी बंद करो! उनमें ख़ास किसकी आवाज़ आती है? जय गुरुदेव। और उनको सपोर्ट कर रहा है भारत का प्रधानमंत्री। क्या नाम? नरेन्द्र मोदी। ‘नर’ माने मनुष्य, ‘इन्द्र’ माने राजा- मनुष्यों का राजा। नरेन्द्र मोदी (अर्थात्) जिस राजा ने सारे भारत में सबकी बुद्धि मोड़ दी। वो हद का नरेन्द्र मोदी है जिसने इंडिया वालों की बुद्धि मोड़ दी। अरे, अभी तो बेहद का बापू/बेहद का नरेन्द्र मोदी आया हुआ है, जो सारी दुनियाँ की बुद्धि मोड़ने वाला है। वो भी सपोर्ट करता है कि बेहद की गऊओं का कोस करना बंद करो। ये तुम्हारी अम्माएँ हैं, अम्मा। इन अम्माओं के साथ ये कृष्ण बच्चे-जैसा व्यवहार मत करो। कृष्ण क्या करता है? कृष्ण क्या कर रहा है? गीता माता का पति बन करके बैठा हुआ है। ब्रह्माकुमारियाँ क्या समझती हैं? किसको समझती हैं गीता माता का पति- गीतापति भगवान? (किसी ने कहा- कृष्ण वाली आत्मा ब्रह्मा को) बाप कहते हैं- ये सारा उल्टा चक्कर घूम गया, माया ने ये चक्कर घुमाया। अब तुम बच्चे इस चक्कर को चेन्ज कर दो। क्या करो? गीता का भगवान कृष्ण नहीं है- गीतापति भगवान, गीता माता के ऊपर कण्ट्रोल करने वाला भगवान कृष्ण नहीं है, जैसे आज की माताएँ समझ बैठीं। क्या समझ बैठी हैं? हमारे जो बच्चे हैं वो ही हमको कण्ट्रोल करें। खुदा-न-खास्ता पति ने शरीर छोड़ दिया, तो माताएँ किसका आधार ले लेती हैं? (किसी ने कहा- बच्चों का ही) सारी प्रॉपर्टी उनके नाम अर्पण कर देती हैं। बच्चा कहेगा- ये चाहिए। हाँ बच्चा, लो। तुम्हारे ऊपर सौ परसेंट विश्वास है। फिर क्या होता है? फिर कान पकड़के बाहर कर देते हैं। ऐसे-2 राक्षसी बच्चे हैं। किसको फॉलो करने वाले हैं? कृष्ण को फॉलो करने वाले हैं, जो अपन को अम्मा का पति-परमेश्वर बनाय के बैठे हैं। मुरली में बोला- जुल्म कर दिया। कितना बड़ा पाप कर रहे हैं! माँ को भी कण्ट्रोल करते हैं। नहीं तो हिस्ट्री कहती है- पुराने जमाने में भारत में माता को कितना मान देते थे! बाप अगर मर जाए तो माता के कण्ट्रोल में रहने में बच्चे अपन को बहुत भाग्यशाली समझते थे। किसकी रहबरी में पल रहे हैं? माता की रहबरी में पल रहे हैं। अभी देखो, विदेशियों के संग के रंग में आ करके हम क्या बन गए! क्या से क्या थे और क्या बन गए!

ऊँच-ते-ऊँच विचारधारा वाले थे और नीच-ते-नीच बन गए। नीच-ते-नीच कौन-सा धर्म है? नास्तिक, रशिया (वाला)। कैसा नीच-ते-नीच? इतना अहंकार भरा हुआ है कि नष्ट करने के लिए हम ऐसी चीज़ तैयार करेंगे (जिससे) एक सेकेंड में हम तुम्हारा देश-का-देश ख़त्म कर दें। क्या चीज़ बनाई? ऐटम

बम्ब बनाय डाला। गुस्से में आ करके ये भी ध्यान नहीं रहता कि हम जो कर रहे हैं, हमने सबसे नीचा काम कर दिया, चांडाल बन गए। जैसे बाबा मुरली में कहते हैं- अगर क्रोध आता है तो अपन को क्या समझना चाहिए? मैं चांडाल का जन्म लेने वाला हूँ। "कब क्रोध न करना है। उसी समय तुम ब्राहमण नहीं, चाण्डाल हो; क्योंकि क्रोध का भूत है।" (मु. 7.5.72 पृ.3 मध्य) बाबा के कहने के बाद अब जितनी बार क्रोध करेंगे तो उतनी बार चांडाल की शूटिंग करेंगे। अरे, बाबा ऊँचे-ते-ऊँचा राजा बनाने आया है। चाण्डालों से भी ऊँचे होते हैं वो चांडाल जो राजघरानों के चांडाल होते हैं; उन राजघरानों के चांडालों से ऊँचे होते हैं थर्ड क्लास दास-दासी, सेकिंड क्लास दास-दासी, फर्स्ट क्लास दास-दासी; जैसे- राम-सीता वाली आत्माएँ पहले फेल होने पर राधा-कृष्ण के दास-दासी बनती हैं, वो हैं फर्स्ट क्लास दास-दासी; राज्य में राज्याधिकारियों का दास-दासियों से भी ऊँचा पद होता है; राज्याधिकारियों से भी ऊँचा पद होता है रानी का; रानी से भी ऊँचा पद होता है राजमाता का; राजमाता से भी ऊँचा पद होता है राजा का और राजा से भी ऊँचा पद होता है महाराजा का।

तो देखो, बाबा की वाणी सुनेंगे रोज़; लेकिन बुद्धि में नहीं रहता है, भूल जाते हैं। बुद्धि हज़ार नियामत है। इस जन्म में हमको भगवान की दी हुई देन- क्या चीज़ मिली हुई है? जो देन भगवान ने हरेक को अलग-2 दी है वो क्या चीज़ मिली है? बुद्धि का वरदान है; भगवान का जन्म से मिला हुआ वरदान। बुद्धि हज़ार नियामत मिली है। अरे, बुद्धि से सोचो- हम क्या कर रहे हैं? भगवान के बताए हुए रास्ते पे चल रहे हैं या माया ठगनी, माया रावण (जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का रूप है), उसके बताए हुए रास्ते पर चल रहे हैं? किसके रास्ते पर चल रहे हैं? माया के रास्ते पर। अरे, हमें भगवान मिला हुआ है। अभी रस्सा-कस्सी का खेल हो रहा है। एक तरफ़ राम सम्प्रदाय और दूसरी तरफ़ रावण सम्प्रदाय। ये रावण सम्प्रदाय का संग करने से, कानों से उनकी बातें सुनने से क्या होता है? जो रावण ज्ञान में चलने का दिखावा तो करता है; लेकिन अंदर से ऐसे काम करता है कि भगवान का चलता हुआ ज्ञान आज ही फेल हो जाए- ऐसे विरोधी बन करके रहे हैं और अभी भी हैं। उनका संग का रंग करेंगे तो क्या हाल होगा? उनकी बातें सुनेंगे तो वो तो हमें उल्टा कर देंगे। ''तजौ मन हरि विमुखन को संग, जिनके संग कुमति उपजति है, परत भजन में भंग।'' हे मन! क्या करो? (किसी ने कहा- बुद्धि का संग) हाँ! जिनके साथ रह करके कुमति पैदा होती है, दुष्ट बुद्धि बनती है, श्रीमत के बरख़िलाफ हम चल पड़ते हैं, भगवान के बताए हुए रास्ते के बरख़िलाफ चल पड़ते हैं, उनका आँख-कान आदि इंद्रियों से संग नहीं करना है।

भगवान ने कौन-सा रास्ता बताया? अव्वल नंबर का वो महावाक्य बताओ, जो ऊँचे-से-ऊँचे महावाक्य बताया? नहीं याद रहा किसी को? अरे, ऊँचे-ते-ऊँचा एक ही मंत्र बताया। भूल गए? (किसी ने कहा- मन्मनाभव) हाँ, ''मन्मनाभव''। मन्मनाभव का मतलब क्या हुआ? मेरे मन में समा जा। कौन-सी आत्मा बोली- मेरे मन में समा जा? शिवबाप तो बोल ही नहीं सकता, शिवबाप को तो मन है ही नहीं। उसको इन्द्रियाँ भी नहीं, इन्द्रियों का मुखिया 'मन' भी नहीं। अभी इन्द्रियों को चलाने वाली 11वीं इन्द्री कौन-सी है? (किसी ने कहा-मन) ये मन तो बिना लगाम का घोड़ा है, जिसको बुद्धि रूपी लगाम ही नहीं लगी हुई है।

अरे, बैल कहो, बैल; बैल भी नहीं, साँड़ कहो, साँड़। साँड़ को लगाम लगी होती है? साँड़ जो गायों से बच्चे पैदा करता है उसको लगाम होती है, नाथ होती है? नहीं होती। तो बोला- ये मन तो साँड़ है, ये मन तो घोड़ा है बिना लगाम का, ये तुम्हें गड्ढे में ले जाएगा (और अभी) ले जा रहा है। ये मन रूपी जो घोड़ा है/बैल है, वो भी शिव के मंदिरों में दिखाया जाता है। उसका मुँह किस तरफ़ है? उसका मुँह ही नाली की तरफ़ है! क्यों? क्योंकि वो जो माता है, जगतजननी है, जलाधारी है, ज्ञान-जल को धारण करने वाली माता है, उस माता का गीतापति भगवान बनके बैठा हुआ है। जो जगदम्बा माता तामसी बनती है, महाकाली बनती है, उसका पति बन करके, उसके मस्तक पर चन्द्रमा रूप में विराजमान होके, राजा बनके बैठ जाता है। सारी माताएँ ये अनुभव करती हैं कि मेरा बच्चा मेरे को पूरी तरह कण्ट्रोल करता है, सर के ऊपर चढ़कर बैठ गया। बोलो- अनुभव करती हैं कि नहीं, आज की दुनिया में? (किसी ने कहा- करती हैं) अभी बाबा कहता है कि बच्चे! उस बैल को पहचानो, साँड़ को पहचानो, जो बैलबाजी कर रहा है। किसके अंदर? राम वाली आत्मा शंकर (शं=शिव, क=ब्रह्मा, र=राम) में प्रवेश करके बैलबाजी कर रहा है। अभी वो बैल शंकर पर सवार है या शंकर बैल पर सवार है? वो बैल शंकर पर सवार है। उल्टा हो गया। लेकिन बाबा कहते हैं- जब शंकर हाईजम्प लगा करके शिव की याद में, बैल पर सवार हो जावेगा, तब उस ऊँचे-ते-ऊँचा बाप 'शिव' की महाशिवरात्रि गाई जाएगी। समझ में नहीं आया! (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ जी, वो कृष्ण वाली आत्मा कहो, बैल कहो, साँड़ कहो, जिसको बिना लगाम वाला घोड़ा कहो, बुद्धि रूपी लगाम ही नहीं पकड़ी गई है जिसकी, बुद्धिमानों की बुद्धि बाप को पहचाना ही नहीं, ऐसा बेलगाम वाला घोड़ा जब शंकर की लगाम में आ जाएगा, कण्ट्रोल में आ जाएगा तो महाशिवरात्रि गाई जाती है। माने उस रात्रि में सब अज्ञान-अंधकार में सो जाते हैं। अरे, 500/700 करोड़ की सारी दुनियाँ तो अज्ञान-अंधकार में सन् 1976 पहले से ही सोई हुई थी; लेकिन जो अपन को ब्रह्मावत्स ब्राह्मण कहते हैं, कोई भी नीच कुरी के हों, वो भी अज्ञान-अंधकार में समा जाएँगे। माया ऐसा फ़ाइनल पेपर लेगी। ऐसे नहीं कि यज्ञ के आदि में जैसे गायन हुआ- राम फेल हो गया, वो अकेला ही फेल होता है। फाइनल पेपर में माया किसी को छोड़ती नहीं। तो वो फ़ाइनल पेपर अभी हुआ? (सभी ने कहा- नहीं हुआ) अभी होने वाला है जो आवाज़ें भी आ रही हैं। जो संगमयुगी कृष्ण है, शास्त्रों में जिसका गायन है कि जरासिंधी उसके ऊपर बार-2 आक्रमण कर रहे थे, अनगिनत बार आक्रमण कर रहे थे, उस कृष्ण ने अपनी प्रजा को उस त्रास से बचाने के लिए क्या किया? (किसी ने कहा- गोवर्धन को उठाया) नहीं, वो तो उठाया ही! समन्दर के भी पार चला गया, द्वारकापुरी में जा करके राजधानी बसाई। कहाँ बसाई? दो अरिका कहो, द्वापरयुग कहो; द्वारिका कहो, जहाँ दो-2 पुर बन जाते हैं, दो-2 राजाएँ बन जाते हैं, दो-2 राज्य बन जाते हैं, दो-2 धर्म होते हैं, दो-2 भाषाएँ होती हैं, दो-2 कुल होते हैं, दो-2 मतें होती हैं। ऐसी दुनिया में जा करके राजधानी जमा दी। जरासिंधी से भी बचाव हो गया। फिर जरासिंध ने कोई आक्रमण नहीं किया।

तो क्या होगा- अकाल पड़ेगा या भारतवासी सरसब्ज़ बनेंगे? (किसी ने कहा- अकाल पड़ेगा) कैसे? बाबा ने तो मुरली में बोल दिया- आगे चलके ऐसा भयंकर अकाल पड़ेगा जो पीने के लिए, बूँद-2 पानी के लिए लोग तरसेंगे, दो टुकड़ा रोटी के लिए भी परेशान होंगे। "आगे चल दुनिया की हालत बिल्कुल खराब होनी है। खाने (के) लिए अनाज नहीं मिलेगा तो घास खाने लगेंगे। फिर ऐसे थोड़े ही कहेंगे, माखन बिगर

हम रह नहीं सकते।" (मु.5.3.76 पृ.3 अंत) ऐसा अकाल पड़ेगा। बोला- तुम बच्चे मत घबराओ। "ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा?" (अ.वा.14.2.78 पृ.48 आदि) कौन-से बच्चे? जो बाप का धंधा सो बच्चों का धंधा, नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा- ऐसे बच्चे भूख नहीं मरेंगे। मुरली में कई बार बोला- मेरे बच्चे भूख नहीं मर सकते। "बाबा की सर्विस में लग जाने से तुम कब भूख नहीं मरेंगे।" (मु.ता. 16.10.72 पृ.3 मध्यांत) अरे, कौन-से बच्चे? दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाले बच्चे? दूसरे धर्मों का देह-अभिमान का छिलका चढ़ाने वाले बच्चे? (किसी ने कहा- नहीं) क्रिश्चियन धर्म वाले होंगे तो उन पर कौन-सा छिलका चढ़ा हुआ होगा? क्रोध का छिलका चढ़ा हुआ होगा। जैसे बहुत मोटा छिलका चढ़ा हुआ होता है तो उसको डंडे से पीटते हैं तब उसका छिलका उतरता है; जैसे- सिंघाड़ा है, पानी में पैदा होता है, पक जाता है, तोड़ लिया, छत पर सूखा लिया, फिर तुम उसको हाथों से तोड़ना चाहो तो वो छिलका नहीं टूटता। क्या करते हैं? अब धर्मराज के डंडे बजेंगे फिर वो टूट जाता है। बाप भी कहते हैं- बच्चे! कैसे ले जाऊँगा? मच्छरों सद्दश ले जाऊँगा। "मैं मच्छरों सद्दश्य सबको ले जाऊँगा।" (मु.ता. 26.10.77 पृ.3 मध्य) जैसे मच्छर में देहभान रूपी माँस होता ही नहीं। मच्छर में माँस होता है? अगर माँस होता तो चीनी लोग उसको भी पकाके खा जाते। उसमें माँस होता ही नहीं। तो तुम्हारा देह-अभिमान रूपी माँस मच्छरों सद्दश ख़त्म कराके ले जाऊँगा। इसलिए जल्दी सुधरना अच्छा है। बाप आया हुआ है। बाप की रहबरी में रहकर सुधरना अच्छा है या वो विदेशी-विधर्मी राक्षसों की रहबरी में सुधरना है? (किसी ने कहा- बाप की) क्योंकि सन् 2027 के बाद तो वो राक्षस सारी दुनियाँ को अपने कण्ट्रोल में ले करके बैठे हुए होंगे। कौन-सी दुनिया को? वो सारी दुनियाँ को, जो 108 की माला के भांती नहीं बने होंगे, बाप के गले के मणके नहीं बने होंगे, उन सबको अच्छे-से कण्ट्रोल करेंगे। तो बाप का प्यार अच्छा नहीं लगता? (किसी ने कहा- लगता तो है) बाप का प्यार प्रसिद्ध है। क्या प्रसिद्ध है? भगवान प्यार का सागर है। ऐसे नहीं कोई कहता, धर्मराज प्यार का सागर है। भगवान प्यार का सागर है; धर्मराज तो है मार का सागर और धर्मराज का चित्र भी कैसे दिखाया जाता है अष्टदेवों में? भयंकर चित्र है भैंसे पर सवार।

तो बाप कहते हैं कि लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में, जो राजाएँ हैं वो मंदिर आज भी अपने घर में बनाते हैं और माथा टेकते हैं। किसको? लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में माथा टेकते हैं। ये शूटिंग कहाँ होती है? (किसी ने कहा- संगम पर) ये मन-मंदिर में किसको बसाते हैं? निराकार शिव बिंदु को बसाते हैं या लक्ष्मी-नारायण की बार-2 याद आती है? आओ-3! हे पतित-पावन, आओ! किसको बुलाते हैं? (किसी ने कहा- सीता-राम को) तुम भारतवासी बुलाते हैं। जो विदेशी-विधर्मी पतित से पावन बनते ही नहीं वो मेरे को बुलाते ही नहीं। तो जो बच्चे बुलाते हैं वो बच्चे भक्तिमार्ग में अपने घर में मंदिर बनाते हैं, चाहे कैसी भी गिरी हुई दुनिया बन जाए, प्रजा के ऊपर प्रजा का राज्य चल जाए, फिर भी अपने घर में मंदिर बनावेंगे और उनकी पूजा करते हैं। तो देखो, वो दो प्रकार के नारायण हैं- एक, गिरती कला वाले नारायण और एक है सिर्फ़ चढ़ती कला वाला नारायण। कौन-से युग में? जो संगमयुग में प्रत्यक्ष होता है। दोनों नारायणों में कोई फ़र्क है? वो भी महाराजा-महारानी, वो भी राजा-रानी। क्योंकि सतयुग में महाराजा-महारानी और त्रेता में राजा-रानी- ये तो प्रसिद्ध हुए हैं। तो महाराजा-महारानी और राजा-रानी तो ये भारत में होते हैं। यहाँ महाराजाएँ भी हुए और राजा-रानी भी हुए। अभी जब मत्था टेकते हैं तो उन बेचारों को ये समझ ही नहीं है ना! उनको

तो बहुत समझाना सहज है। जो अपने घर में लक्ष्मी-नारायण का मंदिर बना करके आज माथा टेक रहे हैं, उनको समझाना तुम बच्चों के लिए बहुत सहज है। तो तुम भी राजा और जिनको माथा टेकते हैं वो भी राजा। ये इसमें क्या फ़र्क है? इन्होंने वो राजाई कैसे प्राप्त की? इन्होंने, जिनको अपने घर में मंदिर बना करके माथा टेकते हैं, उन्होंने वो राजाई कैसे प्राप्त की? जवाब दो। कैसे? (किसी ने कहा-... पुरुषार्थ के आधार पर) हाँ, पुरुष माने आत्मा के लिए करना है।

जो कुछ करना है किसके लिए (करना है)? आत्मा के लिए (करना है); देह के लिए कुछ भी नहीं करना। ऐसी स्टेज बन जावेगी तब राजा-महाराजा बनेंगे; नहीं तो नहीं बनेंगे। ये कैसे का जवाब हुआ। राजाई कैसे प्राप्त की? जब ऐड़ी से लेकर चोटी तक के पुरुषार्थ में ऐसी ताकत लगाई कि पेट का, देह का, देह के संबंधियों का, जिन्दगी में देह से सम्पर्क जिनका किया उनका, देह के पदार्थों की कोई परवाह नहीं की, ऐसा पुरुषार्थ किया लगावपूर्वक- ''एक शिवबाबा दूसरा न कोई'', बाकी इच्छा मात्रम् अविद्या, ऐसे राजाई प्राप्त की इन्होंने। वो पवित्र हैं, तुम अभी अपवित्र हो। वो अपने घर में, मंदिरों में बैठ करके जिनकी पूजा करते हैं, वो क्या हैं? वो पवित्र हैं, तुम पतित हो। ये क्या बात हुई? वो पवित्र हैं? अरे! जो संगम में नर से डायरैक्ट नारायण बनते हैं, वो पवित्र हैं? (किसी ने कहा- अभी हैं) (किसी ने कहा- अभी नहीं हैं) अभी नहीं हैं! ये तो दो बातें हो गईं। फैसला करो, वोट डालो। (किसी ने कहा- पवित्र हो रहे हैं पुरुषार्थ के द्वारा) पुरुष अर्थात् आत्मा के अर्थ कर रहे हैं, पुरुषार्थ कर रहे हैं, देह के अर्थ नहीं कर रहे? देह के अर्थ कर रहे हैं या पुरुष माने आत्मा के अर्थ कर रहे हैं? (किसी ने कहा- आत्मा के अर्थ) तो जब सारा पुरुषार्थ देह के अर्थ न करके, देह की परवाह न करके सब-कुछ तन से, मन से, धन से आत्मा के ही अर्थ करेंगे, तो पवित्र हुए या अपवित्र हुए? (किसी ने कहा- पवित्र हैं) लक्ष्य सही है या गलत है? सही लक्ष्य है। पवित्र हैं; क्योंकि संकल्प मात्र अंदर पवित्रता के फाउंडेशन का है या अपवित्रता के फाउंडेशन का है? लक्ष्य क्या है? पवित्र बनने का लक्ष्य है। भले साइकिल पर चढ़ने वाला बार-2 गिरता भी है, तो भी 'हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम।' ''हिम्मत हारे हार है, हिम्मत के जीते जीत।'' हिम्मत हार गया तो हार हो गई, हिम्मत नहीं हारे तो ये नहीं कहा जा सकता कि हार गए। हार गए ये पक्का है या जीत निश्चित है? (सभी ने कहा-जीत निश्चित है) तो वो संगमयुगी नारायण पवित्र हैं, तुम पतित हो।

तो इन्हों को राजाई, ये जो पवित्र थे, उनका घराना कहाँ गया? जिन लक्ष्मी-नारायण की पूजा घर में मंदिर बनाकर करते हैं, उनका घराना कहाँ गया? घर के वो भांती कहाँ गए, जिनको गले लगा करके बच्चों की तरह खिलाया था, चलाया था, परवरिश की थी? अरे! कहाँ गए- ऊपर हैं या पाताल में हैं? ध्यान में नहीं आ रहा! अरे, यहीं पु० संगम में बैठे हैं कि कहीं चले गए, ऊपर-नीचे चले गए? (किसी ने कहा- यहीं बैठे हैं) हाँ। फिर! उनका घराना कहाँ गया? माने घर के जो भांती थे, संगम में जब वो नर से नारायण बने थे, तो उनका पूरा घराना कहाँ गया, परिवार कहाँ गया जो गले के हार बने थे? वो गले के हार सुने हैं ना! हार नहीं सुने? (किसी ने कहा- हाँ जी!) आठ तो सर के ऊपर बैठे हैं, 108 माला गले में हार बने लटके बैठे हैं, 16 हज़ार बाँहों में मालाएँ पड़ी हुई हैं। चित्र नहीं देखा? (किसी ने कहा- देखा) देखा ना! तो वो उनका सारा

घराना है, परिवार है- राजघराना। जो 84 के चक्र में राजाएँ बनने वाले हैं, कम-से-कम कोई-न-कोई जन्म में राजाएँ नहीं बनेंगे तो प्रिंस-प्रिंसेज़ ज़रूर बनेंगे। कम-से-कम त्रेता के अंत में 16 हज़ार प्रिंस-प्रिंसेज़ की संख्या ज़रूर पूरी हो जाएगी। वो राजघराना है सारा, 16 हज़ार का कहो, 108 का कहो, 1008 ब्रह्मा की भुजाओं का कहो, 8 का कहो। तो वो घराना कहाँ गया? अरे, यहीं बैठे हैं ना! ये नहीं बुद्धि में आता कि हम ही उस घराने के थे! ये बात भी बुद्धि में से उड़ गई! (किसी ने कहा- प्रायःलुप्त हो गया) क्या लुप्त हो गया? (किसी ने कहा- पूरा लुप्त नहीं हुआ) उन बेचारों को ये तो मालूम ही नहीं पड़ता है कि हम वही घराने वाले हैं जो पावन बनकर गए हैं।

किनकी बात की? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) हाँ, जो नर से नारायण बनने वाले, जिनकी राजाएँ घर में बैठ करके मंदिर बना करके पूजा करते हैं, उनको ये पता ही नहीं है, मालूम ही नहीं पड़ता है। ऐसी स्टेज पकड़ तो लेते हैं पुरुषार्थ की; लेकिन उनको पता ही नहीं पड़ता है कि हम वही घराने वाले पावन बनकर गए हैं। तो उनका संग का रंग लेने से पावन बनेंगे या पतित बनेंगे? (किसी ने कहा- पावन) पहचानके या बिना पहचाने? (किसी ने कहा- पहचानके) पहले पहचानें कि हाँ, उनकी पुरुषार्थ की जो गति है वो ऐसी है; कैसी? कैसा पुरुषार्थ? तन का नहीं, आत्मा को पुरुष कहा जाता है। तन के लिए नहीं करते हैं जो कुछ करते हैं। किसके लिए करते हैं? आत्मा का उद्धार करने के लिए करते हैं, जो गीता में कहा- "उद्धरेत् आत्मना आत्मानम्" (6/5)- उत्+हरेत्- ज्योतिबिंदु आत्मा को, उत् माने ऊपर हरण करके ले जाए। (किसी मोबाइल की घंटी बजी) अरे भाई, इधर-उधर नहीं, एक तरफ़ ध्यान दो। क्या कहा? जो ध्यान खींचने वाले हैं वो तो अपना पाप बना ही रहे हैं। उनसे 20 बार कहो, ये मोबाइल घर में रखके आओ या तो बंद कर दो, वो नहीं मानेंगे। उस मोबाइल तरफ़ ध्यान ही नहीं देना है, अपने को कण्ट्रोल करना है। तो क्या बताया? उन नर से नारायण बनने वाले, भक्तिमार्ग में राजाओं से जो पूजा ले रहे हैं, घर में मंदिर बना करके जिनको बैठाया गया है, उनको मालूम ही नहीं पड़ता है कि हम वो ही घराने वाले अभी पावन बन गए हैं। किस आधार पर बताया पावन बन गए? (किसी ने कहा- पुरुषार्थ के आधार पर) कैसा पुरुषार्थ? पुरुष अर्थ। काहे के अर्थ? आत्मा (के अर्थ)। जो कुछ भी करेंगे किसके लिए करेंगे? आत्मा के कल्याण के लिए करेंगे। इन्द्रियों से कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे आत्मा का पतन हो जाए। नहीं समझ में आ रहा?

अरे, ये एक ही सतसंग दुनिया में ऐसा है जिसमें छूट है- अगर कोई संशय आता है तो पूछना चाहिए। जो गीता में लिखा है- "परिप्रश्नेन सेवया" (4/34)- प्रश्न-उत्तर की सेवा करके हर बात को हल करना चाहिए। तो ये भी तो आ करके सुनेंगे तो सही ना एक दिन बच्ची! कौन? किसके लिए बताया? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा के लिए) ब्रह्मा बाबा के मुख से 1966 में बोला। क्या बोला? कि ये नर से नारायण बनने वाले बच्चे भी एक दिन आ करके सुनेंगे तो सही ना! झूठ बोला? (किसी ने कहा- नहीं) बाबा ने स्पष्ट कर दिया कि आगे चलके निकट भविष्य (सन् 1969) में, वो बच्चे आने वाले हैं और इस ज्ञान को सुनेंगे तो सही ना! एक दिन सुनेंगे। ये भी सुनेंगे। माना तुम बच्चे ही नहीं सुन रहे हो। कौन सुनेंगे? ये नर से नारायण बनने वाले भी सुनेंगे। जब समझाएँगे कि यहाँ राजाओं का राजा बनते हैं। क्या समझाएँगे? कि

यही एक सत्संग है जहाँ राजाओं का राजा बनते हैं- ये बात सुनाएँगे। अभी राजाओं को भी समझाना पड़े। अभी तक तो जो प्रदर्शनियाँ कर रहे थे, मेले-मलाखड़े कर रहे थे, कॉन्फ्रेंस कर रहे थे, प्रोजेक्टर कर रहे थे, उससे प्रजा निकाल रहे थे (1966 की बात बताई) या राजाओं को निकाल रहे थे? प्रजा को निकालने की सेवा कर रहे थे। अभी भी वो ब्रह्माकुमार-कुमारी प्रजा की सेवा कर रहे हैं या राजाओं को पढ़ाई पढ़ाने की सेवा कर रहे हैं? प्रजा की सेवा कर रहे हैं। राजयोग तो उन्होंने सीखा ही नहीं, तो राजयोग की पढ़ाई कैसे पढ़ाएँगे! तो उन राजाओं को भी समझाना पड़े। ये भी आएँगे एक दिन। कौन? जो 108 राजाएँ बनने वाले हैं, शिव शंकर भोलेनाथ के गले का हार बनने वाले बच्चे भी एक दिन आएँगे। ऐसे मत कोई समझे कि नहीं आएँगे। वो सब बच्चे जो राजघराने के थे, वो सब इसी पु०संगम पर आएँगे। ऐसे मत समझो- नहीं आएँगे। नहीं, दिल्ली में उनको भी निमंत्रण भेज देना चाहिए। क्या कहा? मुरली में भविष्य के लिए ऑर्डर दिया कि दिल्ली में उनको भी निमंत्रण आने के लिए भेज देना चाहिए। ऑल इंडिया में बिखरे पड़े हैं, पढ़ाई पढ़ रहे हैं या पढ़ रहे होंगे। गलत बोला? अरे, 1966 की मुरली है ना! भविष्य के लिए बताया कि वो सब राजघराने में आने वाले आएँगे। दिल्ली में उनको भी निमंत्रण भेज देना चाहिए। दिल्ली में ही क्यों, माउंट आबू में क्यों नहीं? (किसी ने कहा- दिल्ली में ही राजधानी) हाँ, पिछले साल की दो-चार अव्यक्त-वाणियों में बाबा ने ये इशारा दिया- दिल्ली में राजधानी स्थापन हो रही है। दिल्ली में सबको जाना पड़ेगा। तुम बच्चे भी दिल्ली में जाएँगे। "हमारी राजधानी यही दिल्ली बने।" (अ.वा.15.11.16 पृ.2 मध्यादि) तो ब्रह्माकुमारियाँ गुलज़ार दादी में आए ब्रह्मा बाबा का मुँह बंद कर रही थीं- बाबा! आप माउंट आबू में बैठे हुए हैं, आप दिल्ली में नहीं बैठे हुए हैं! समझते हैं- बाबा की आत्मा बूढ़ी हो गई, सारा भूल गई। अरे, वो तो माता है ना! माता की वाणी है ना! अरे, माता की इतनी अवज्ञा क्यों करते हो, जैसे बैल के मुँह पर मुसीका लगाया जाता है! किसी का मुँह बंद करते हैं तो क्या करते हैं? मुँह पर मुसीका लगाय देते हैं। तो उन राजघराने वाले राजाओं को भी ऐसे लिखना है कि राजाओं का राजा; ये लिखना है, अभी कोई ने लिखा नहीं है। उनको भी ऐसे लिखना है कि राजाओं का राजा यानी लक्ष्मी-नारायण, जो ये पतित राजाओं का भी पावन राजा थे, वो कैसे बनते हैं। बनता है- बोला है।

वो पतित राजाओं का राजा, महाराजा कैसे बनता है, वो आ करके इस प्रदर्शनी से समझो। किस प्रदर्शनी से? (किसी ने कहा- चैतन्य प्रदर्शनी) 1966 में जो प्रदर्शनी हो रही थी उसकी बात बताई? (किसी ने कहा- नहीं) अरे! (किसी ने कहा- चैतन्य प्रदर्शनी) ऐसे चित्रों की प्रदर्शनी जिनमें छपा हुआ हो अर्थात् बात बुद्धि में छपी हुई हो, सारा ज्ञान बुद्धि में छपा हुआ हो। बाबा क्या बोलते हैं? चित्र ऐसे बनाओ, जिनमें ज्ञान की लिखत हो। ऐसे चित्र जिनमें ज्ञान की कोई लिखत ही नहीं, ज्ञान का कोई छपावाही नहीं, वो मत बनाओ। तो कैसे चित्रों की प्रदर्शनी बताई- जड़ चित्रों की या चैतन्य चित्रों की? कोई चैतन्य चित्रों की प्रदर्शनी बनाओ और लिखो कि इस प्रदर्शनी में आ करके समझो। निमंत्रण भेज देने का है।

वो जो पूज्य थे राजा और महाराजा-महारानी सो पुजारी बन करके फिर अपने ही वो पास्ट जन्मों को कैसे भक्तिमार्ग में पूजते हैं, सो आओ! हम तुम्हें समझाएँ। ऐसे ही तो होते हैं ना बच्चे- आपे ही

पूज्य, आपे ही पुजारी। चाहे वो शिवलिंग के रूप में हों, चाहे वो मूर्तिमान- मूर्ति वाले देवताओं के रूप में हों, वो सब कैसे हैं? आपे ही पूज्य बनते हैं और आपे ही द्वापरयुग से भक्तिमार्ग में पुजारी बन जाते हैं। वो खुद पूज्य राजा-रानी और खुद पुजारी राजा-रानी हो करके फिर अपने ही वो जन्मों को, आत्माओं का जो पहले-2 है जन्म, उनको पूजते हैं। पहले-2 जन्म कौन-से युग में होता है? (किसी ने कहा- संगम में) उनके चित्र बना करके द्वापर में भक्तिमार्ग में उनको पूजते हैं। ये कितनी समझ की बात है! अभी संगमयुग में शूटिंग हो रही है या नहीं हो रही है? अभी इस बात की शूटिंग भी हो रही है। समझ की बात है। राजाओं को भी समझाय तो सकते हैं ना! जैसे प्रजावर्ग को समझा सकते हैं, (ऐसे) राजाओं को नहीं समझा सकते? ऐसे तो नहीं कि नहीं समझाय सकते हैं। चिट्ठी में भी समझाया जा सकता है कि दिल्ली में राजधानी स्थापन हो रही है, आ करके देखो, समझो- कैसे राजधानी स्थापन हो रही है।

तो ये सीढ़ी में ये भी बहुत क्लीयर दिखलाना चाहिए कि बिगर लाइट वाले राजाओं के भी चित्र हैं कि नहीं भक्तिमार्ग में? हैं। बिगर लाइट वाले, वो लाइट वाले जो फिर ये राजा-रानी हैं, जिनको पवित्रता की लाइट दिखाई गई है अथवा यज्ञ की ज़िम्मेवारी का ताज जिन्हों को लाइट के रूप में दिखाते हैं ना, ताज धारण किया है। ये राजा-रानी हैं, वो लक्ष्मी-नारायण का चित्र बनना ही चाहिए। यहाँ जो पुजारी बनाते हैं ना, क्या बनाते हैं? अरे, गुरु लोग क्या बनाते हैं? पूज्य देवता बनाते हैं कि पुजारी बनाते हैं? पुजारी बनाते हैं; और शूटिंग कहाँ होती है? ब्राहमणों की दुनिया में अभी शूटिंग भी हो रही है। क्या बना रहे हैं- पूज्य बना रहे हैं, देवता बना रहे हैं या पुजारी बना रहे हैं? पुजारी बना रहे हैं। लक्ष्मी-नारायण का राज्य, उसमें फिर भी वो ही राजा-रानी बिगर ताज, वो बिगर लाइट के मत्था टेकते हैं। सीढ़ी के चित्र में दिखाया है। प्रैक्टिकल में भी देखा जा सकता है कि जो राजाएँ हैं उनको ताज भी नहीं है। ताज है? (किसी ने कहा- नहीं) ज़िम्मेवारी का भी ताज नहीं, फिर लाइट का भी ताज नहीं। वो मत्था टेकते हैं। बस, ये बड़ी समझानी है। किस बात की? कि कौन पूज्य और कैसे पुजारी। पुजारियों में भी नंबरवार और पूज्य में भी नंबरवार। ओमशांति।